गदाय की कहानी

तेलुगु मूल - डा. शिवरामकृष्णं

हिन्दी अनुवाद - डा. सुमन लता

भार्गवी प्रकाशन

गदाय की कहानी

तेलुगु मूल - डा. शिवरामकृष्ण
हिन्दी अनुवाद - डा. सुमन लता

आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी की आंशिक
आर्थिक सहायता से प्रकाशित।

प्रथम संस्करण : फरवरी 2000

मूल्य : 60/-

प्रकाशक :
c/o भार्गवी प्रकाशन
"सुर-सौरभ", 65-ए, 1-8-4/ए, रवीन्द्रनगर,
हब्सीगुडा, हैदराबाद-500 007. (आं.प्र.)
दूरभाष : 27174494

मुद्रक :
श्री उदय प्रिंटर्स
निकट वाइ.एम.सी.ए.,
नारायणगुडा, हैदराबाद-500 029. (आं.प्र.)

भार्गवी प्रकाशन माला : 2

प्रो. भीमसेन 'निर्मल'
पूर्वाध्यक्ष एवं सम्मान्य आचार्य
हिन्दी विभाग,
उस्मानिया विश्व विद्यालय.

हैदराबाद
मकर संक्रांति
15-1-2000

आशंसा

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में घोर पराजय के कारण समस्त भारत जाति हतप्रभ हो गई थी। अपने सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं पर मानों प्रश्न चिह्न ही लग गया। किन्तु भारत की इस पवित्र कर्मभूमि को सर्वेश्वर ने कभी भुलाया नहीं। भारतीय संस्कृति की महानता को समस्त संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने वाले कई महानुभावों का उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आविर्भाव हुआ। इन महानुभावों ने अनेक रूपों में, अनेक क्षेत्रों में भारतीयताकी अस्मिता को बनाये रखने का सफल प्रयास किया। ऐसे ही महानुभावों में रामकृष्ण परमहंस और उनके जगद्विख्यात शिष्य विवेकानंद प्रथमत: उल्लेखनीय है।

विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। पिछले लगभग सौ वर्षो में रामकृष्ण मिशन ने सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में जो काम किया है, वह किसी से छिपा नहीं।

रामकृष्ण मिशन के मूल पुरूप रामकृष्ण परमहंस के

बाल्यकाल की विभिन्न घटनाओं का प्रोफेसर शिवरामकृष्ण ने रोचक और सुपाठ्य रूप से वर्णन किया है, जिन्हें पढकर पाठक चकित रह जाते हैं।

उदीयमान कवयित्री और अनुवादिका डा. सुमन लता ने प्रोफेसर शिवरामकृष्ण की "गदाय की कहानी" का तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद कर स्तुत्य कार्य किया है। जन्म और बालपन से बनारस से जुडे रहने के कारण सुमन लता को हिन्दी भाषा प्रयोगों पर अच्छा अधिकार है। इस कारण से यह अनुवाद अनुवाद सा न लगकर मौलिक रचना सा प्रतिभासित होता है।

आशा है हिन्दी के जिज्ञासु पाठक इस अनुवाद का हृदय से स्वागत करेंगे, जिससे अनुवादिका का आत्मबल बढेगा और अनुवाद के क्षेत्र में वह इतोधिक कार्य कर सकेगी।

-भीमसेन 'निर्मल'

एम. उपेन्द्र
भूतपूर्व प्राचार्य
हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

हैदराबाद
15-1-2000

शुभकामनाएँ

"गदाय की कहानी", पुस्तक का नाम ही कुछ विचित्र, पर विलक्षण है। श्री रामकृष्ण परमहंस के कुछ भक्तों को छोड़कर अधिकांश लोगों को शायद ही इस बात का पता है कि रामकृष्ण का बचपन का नाम "गदाधर" था और लोग प्यार से उसे "गदाय" कहकर बुलाते थे। पर पुस्तक का यह नाम ही पुस्तक में उत्सुकता उत्पन्न कराता है और पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यदि पुस्तक का नाम "परमहंस का बचपन" या ऐसे ही और कुछ होता तो पढ़ने की उत्सुकता नहीं होती। क्योंकि उनके बचपन पर सैकड़ों पुस्तकें है।

पुस्तक पढ़ते समय इस बात का तनिक भी आभास नहीं होता कि यह एक अनूदित रचना है।ऐसा प्रतीत होता कि हम मूल रचना का पाठ कर रहे हैं। डा. सुमनलता एक सिद्धहस्त अनुवादक हैं, जिनका हिन्दी और तेलुगु, दोनों भाषाओं पर समान अधिकार है। अनुवाद में ऐसी रवानगी है कि एक बार पुस्तक पढ़ना आरंभ करते हैं तो उसे समाप्त करना अनिवार्य हो जाता है।

डा. शिवराम कृष्ण ने परमहंस के बचपन की घटनाओं को अत्यन्त ही भावुकता, पर जादूई ढंग से पिरोने का प्रयत्न किया है। इसलिए यह पुस्तक मात्र जीवन वृत्तांत न रह कर एक साहित्यिक कृति बन

गई है । और कमाल है कि डा. सुमन लता ने भी अनुवाद में उस सृजनात्मक साहित्यिकतत्व को बनाये रखा है । वास्तव में यह एक कठिन काम है । साहित्य में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ पर अनूदित रचनाएँ मूल रचना से भी अधिक सशक्त बन गई हैं । हो सकता है कि "गदाय की कहानी" भी ऐसा एक उदाहरण बन जाए । शब्दों के, सूक्तियों के, वाक्यों के निर्माण और घटनाओं के वर्णन आदि में डा. सुमन लता ने अनुवाद कला की परिपक्वता का सबूत दिया है ।

अनुवाद एक कठिन और जटिल प्रक्रिया है । डा. सुमनलता कई वर्षों से अनुवाद से क्षेत्र से जुड़ी हुई है। मैं आशा करता हूँ कि डा. सुमनलता के प्रयत्नों से समृद्ध तेलुगु साहित्य हिन्दी के पाठकों को प्राप्त होता रहेगा ।

शुभ कामनाओं सहित

एम. उपेन्द्र

डा. सुरभि
प्राध्यापिका (राजनीति शास्त्र)
हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

हैदराबाद
मकर संक्रान्ति

अनुवाद भी मौलिक सृजन के समकक्ष

अनुवाद विधा के माध्यम से डा. सुमनलता जी ने गदाय के चरित्र का विश्लेषण सरस और अनुपम ढंग से किया है। वे स्वयं एक सफल लेखिका हैं। अतः उनके द्वारा "गदाय की कहानी" का अनुवाद मौलिक सृजन के समकक्ष ही है। भाषा का प्रवाह बने रहने के कारण प्रत्येक घटना से जुड़ी कहानी हृदय का आध्यात्मिक स्तर तक छू जाती है।

रामकृष्ण परमहंस के बालरूप का अलौकिक और मधुर चित्रण कुशलता से अनुवादित किया गया है। पढ़ते समय ऐसे जान पड़ा कि गदाय के गाँव की मिट्टी की सौंधी खुशबू और वायु का ठण्डा झौंका मेरे रोम कूपों में समा गया हो।

कई हाथों तक इस सुन्दर अनूदित कहानी को पहुँचाने के लिए डा. सुमन लता जी को बधाई स्वरूप इतना ही कहूँगी -

श्रद्धा और विश्वास है जहाँ,
खुलता है जीवन का रहस्य वहाँ ।

-शुभाकांक्षी

सुरभि

गदाय की कहानी

लेखक का अन्तरंग

मेरे मन में एक विचित्र इच्छा है कि अगर गुरुदेवजी के समय में मैंने भी जन्म लिया होता तो.....? वैसे गुरुदेवजी नित्य चैतन्य ही नहीं बल्कि चिरजीवी भी है। लेकिन मैं तो ठहरा एक साधारण मनुष्य! मेरी चिन्तन की परिधि भी बहुत छोटी है। फिर भी मैं गुरुदेव के बारे में मन और मस्तिष्क से सोच सकता हूँ और कल्पना भी कर सकता हूँ। अत: उनके समय में मै ने भी जन्म लिया होता? उनके समीप रहा होता?..............

यह छोटी सी पुस्तक कुछ सीमा तक इन्ही प्रश्नों का समाधान है।

डॉ. शिवरामकृष्ण

"तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः"

"गुरुकृपांजन पायो मेरे भाई"

श्रद्धेय-गुरु डॉ. शिवरामकृष्णजी ने अपनी यह 'अमूल्य' पुस्तक देकर मुझ पर बडी 'कृपा' की है। पुस्तक को हाथ में लेते ही मैंने एक ही बार में पूरा पढ डाला और निश्चय भी कर लिया कि इसे मैं हिन्दी में अनुवाद करूँगी। 'कृपा' शब्द का प्रयोग मैंने इसलिए किया है कि इस ग्रन्थ के पठन के समय लेखक के साथ-साथ मुझे भी गुरुदेव के समीप हँसने-खेलने और दुःखाश्रु बहाने का अद्‌भुत संयोग मिल गया और साधारणीकरण हो गया है।

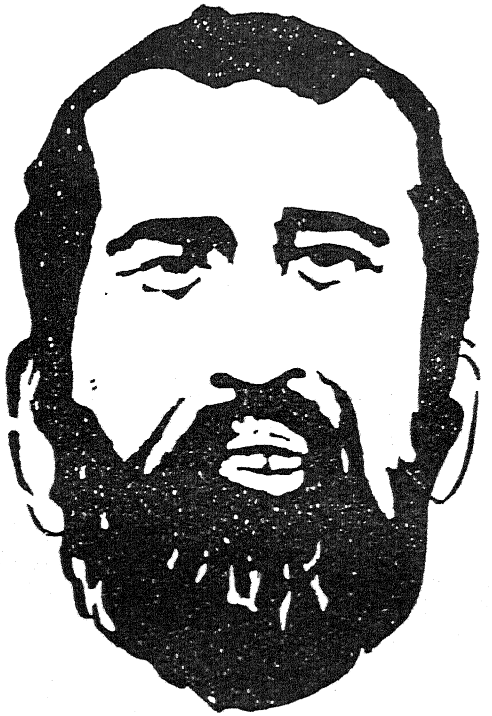
किसी भी अच्छी रचना को हाथ में लेते ही उसे अनुवाद करने की प्रेरणा मुझे पग-पग पर श्रद्धेय गुरू डा. भीमसेन 'निर्मल'जी से प्राप्त होती रही है। मेरा अनुवाद ही उनके लिए समर्पित एक श्रद्धा 'सुमन' है।

अपने सहकर्मी श्री उपेन्द्रजी तथा डा. सुरभिजी को मैं धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिन्होंने मेरी पूरी पाण्डुलिपी को पढकर अपने विचारों को सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत किया है।

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिनके आर्थिक सहयोग से पुस्तक को इस रूप में लाने में मुझे सफलता मिली।

–डा. सुमन लता

वसंत पंचमी
10 फरवरी 2000



गदाय की कहानी

''गदाय''! कितना प्यारा नाम है! नाम ही नहीं, मेरा मित्र है भी कितना सुन्दर! उसके नेत्रों में कुछ आकर्षण है। मेरा मित्र अगर अपने सुन्दर नेत्रों से आपकी ओर देखता है तो आप अवश्य रोमांचित हो जाएँगें, हाँ! उसके नैनों में ममता, वात्सल्य और भोलापन जैसे सभी भाव एक साथ झलकते हैं- मानो यह कहने के लिए कि, ''मै तुम पर संपूर्ण विश्वास रखता हूँ''।

उसकी कंठ ध्वनी? कैसे वर्णन करूँ मै उसके कंठ से निकलने वाले मधुर ध्वनी तरंगों का? उसकी आवाज आपको अपनी ओर खींच लेती है, लोरी सुनाती है और अनजाने में हीं हमें शासित भी करती है। लेकिन वह शासित होना भी कितना मधुर होता है इसे मै शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता! बस, मेरी तो यही प्रार्थना है कि जनम-जनम तक मै अपने मित्र के इन नेत्रों को देखता रहूँ और उसकी कंठध्वनी को सुनता ही रहूँ। न मुझे मुक्ति चाहिए और न हीं जन्म राहित्य!

मान लीजिए कि भगवान मेरे सामने खडे होकर मुझसे कहें कि वर माँगलो! तो मैं साफ कह दूँगा कि ''मुझे और कोई वर नहीं चाहिए''। क्या गदाय के समीप

रहने का सौभाग्य प्राप्त होने के वाद भी मेरे अंदर कोई इच्छा रहेगी?...............न-न!

सुना है कि शेषनाग की सहस्र जिह्वाएँ होती है। फिर भी मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हमारे गदाय के सौंदर्य का वर्णन करना तो उसके बसकी बात भी नहीं। इसलिए मुझसे भी मत पूछिए! क्योंकि माँ द्वारा प्यार-दुलार से दूध-रोटी खिलाते समय या पीठ पर हाथ फेरते समय आप अपनी माँ की आँखों में तैर आए प्यार का वर्णन कर सकते हैं? नहीं! मैं तो शर्त लगाता हूँ कि आप क्या, इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति इस ममता से भरे भाव को अपने शब्दों में बाँध नहीं सकता।

यदि आप अपने स्नेह भरे भौतिक नेत्रों से, और प्यार भरे अन्तर्चक्षुओं से देखने का प्रयत्न करेंगे तो गदाय सदा के लिए आपकी आँखों की पुतली में बस जाएगा और कभी न छोडेगा । ठीक वैसे ही जैसे हमारी माँ हमें छोडकर कभी-नहीं जाती है।

वैसे मुझे स्वयं स्मरण नहीं है कि पहली बार मैंने गदाय के इन नैनों को कब देखा है! अरे, कैसी आँखें हैं- मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आता! एक बार गदाय ने ही मुझे समझाया कि प्यार से अंडों को सेती हुई मादा पक्षी की आँखों के समान अधखुली होती है उसकी आँखें!

हमें यह अनुभव होता है कि किसी मनोरम दृश्य को या स्थूल दृष्टि को न दिखनेवाले सत्य को उसकी आँखें देख रही हैं। उसकी आँखें जगत की जननी के दिव्य सौंदर्य को और माँ की मुस्कान को देखने में शायद तल्लीन हैं। मुझे और कुछ नहीं मालूम! मुझे तो इस दुनिया का सारा सौंदर्य अपने मित्र गदाय के नेत्रों में ही दिखता है। उसके नेत्रों की ओर देखना ही बस, मेरे लिए सब कुछ है! उससे अधिक मेरी आँखों को और क्या चाहिए? और उसकी नाक? वैसे, सुन्दर नाक की तुलना हमेशा चंपाकली से की जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि अपने गदाय की नाक तो बिल्कुल योग प्रक्रिया के लिए ही बनाई गयी है। अब आप मुझसे अवश्य पूछेंगे कि इस योग प्रक्रिया के बारे में तुझे क्या मालूम? वैसे मैं आपसे एक रहस्य बताता हूँ। इस योग प्रक्रिया के बारे में गदाय ने मुझसे स्वयं कहा था। अब आप क्या कह सकते हैं? बोलिये तो सही।

मेरे गदाय का नाक नक्शा एक ओर और उसकी मुस्कान एक ओर! क्योंकि उसमें संपूर्ण सृष्टिका रहस्य है! उसमें जीवन का माधुर्य है, दुःख है और करुणा है। उसकी मुस्कान को देखते हैं तो लगता है कि, ''अरे! जीवन का माधुर्य पूरा का पूरा अपने ही अन्दर रखकर लोग पागलों के समान बेचैन हो, उसे बाहर ढूँढते हैं।'' गदाय की मुस्कान को देखते हैं तो सीतामाई की वेदना, कृष्ण का वेदान्त, राम का वात्सल्य और ईसामसीह की करुणा का

स्मरण आता है।

हमारे मित्र की देह की छाया? एक बार हमारी शारदामाई ने ही हमसे कहा था कि, ''स्वर्ण के आभूषणों की चमक तुम्हारे मित्र के तन की आभा के सामने कुछ भी नहीं''। इसीलिए शायद उसने 'माँ' से (बडे होने के बाद) प्रार्थना की होगी कि, ''हे जगत् की जननी! सौंदर्य की राशि तो तुम हो! तुम ही यह रंग और सौंदर्य वापस ले लो! ये मेरे किस काम के हैं''?

अरे, मैं तो गदाय के हाथों के बारे में बोलना ही भूल गया। गदाय अपने नाजुक हाथों से संपूर्ण जगत् की कलाओं को वास्तविकता से घोलकर सृजन करता था। मृण्मय को चिन्मय बनाने की प्रक्रिया में न जाने कितने देवी-देवता उसके हाथों में साकार हुए होंगे। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि हमारे गाँव के तालाब के किनारे बैठकर हमें वह मिट्टी लाने का आदेश देता था। आप सोचते होंगे कि क्या वह स्वयं नहीं ला सकता था? बात ऐसी नहीं। हमें भी अपनी लीलाओं से जोडने के लिए ही हमसे ऐसे छोटे-मोटे काम करवाता था।

जानते है आप कि गदाय अपने हाथों से मिट्टी को कैसे स्पर्श करता था? जैसे हम एक नन्हे से बच्चे को, या तालाब से अभी-अभी चुन लाये कमल को बडी

सावधानी से स्पर्श करते हैं ठी वैसे ही! लगता था कि गदाय का स्पर्श पाकर मिट्टी भी पुलकित हो जाती है और अपने अंदर छिपी सारी सुन्दरताओं को उसके हाथों द्वारा ढालने देती है। सुना है कि बालक कृष्ण ने मिट्टी खायी थी। और आज हमारे गदाय के हाथों के स्पर्श से पुलकित मिट्टी हम सबकी आँखों की भूख मिटाती है। उन गुडीयों को हम घण्टों भर देखते ही रह जाते थे, फिर भी हमारा मन नहीं भरता था। हम सब मित्र उससे माँगते थे- "गदाय! मुझे यह गुडिया दे"! "गुडिया"? कहकर वह कुछ गूढ हँसी हँसता था, जिसे उस समय हम समझने में असमर्थ थे। धीरे-धीरे उस हँसी का थोडा-थोडा रहस्य सामने खुलता सा लगा।

एक दिन हमारे गाँव की सारी बहिनें पास के ही गाँव की 'माता' को पूजने निकलीं। चलिए हमारी टोली भी उनके साथ तैयार! हमारे गदाय को सभी चाहते है और वैसे भी गदाय नहीं है तो हमारी टोली में चैतन्य ही कहाँ? इतना अच्छा वह गाता था कि हम सब उसे सुनकर अपना सुध खो जाते थे। गाना सुनते-सुनते चलने में हमें थकान भी नहीं होती थी। ऐसे लगता था कि मानो उसके गायन से चारों ओर का सौंदर्य साकार हो गया हो! जिस देवी या देवता की स्तुति में गीत गाता था, उनका चित्र हमारी आँखों के सामने बराबर खिंचा जाता था।

हम सब गदाय के गान में लीन होकर अपने कदम आगे बढा रहे थे। पल भर के लिए क्या हुआ है किसी को कुछ नहीं मालूम! गदाय का गान रुक गया। उसके मुख पर अनोखी कान्ति! मन्दमुस्कान से भरा अपूर्व प्रकाश! लेकिन उसमें कुछ चैतन्य नहीं और निश्चल खडा हो गया। वैसे तो हम सब अपने गदाय के बारे में जानते ही हैं कि आँखे बन्द करके भी वह देखता है। हाँ! आँखें खोलकर रखने पर भी देख रहा है - इसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। इसीलिए हमनें अपने ढंग से 'माता' का नाम उसके कानों में उच्चारित करने लगे। तब जाकर गदाय इस दुनिया में वापस आया और हम फिर से आगे बढने लगे।

ऐसे कितने अजूबे! एक दिन सीधा मै गदाय से ही प्रश्न कर बैठा कि तुम देखते क्या हो? और देखते हुए सोचते क्या हो? लेकिन इन सब का उत्तर गदाय उतनी आसानी से थोडी ही देगा! बहुत बार पूछने पर उसने मुझसे कहा कि अगर एक मछली को एक छोटे से घडे में रखकर समुंदर में छोड देंगे तो वह आनंदपूर्वक डुबकियाँ लेती हुई तैरने लगेगी। एक तोते को अगर पिंजडे से छुडा दिया जाएगा तो वह आनंद से आकाश में पल्टियाँ मारते हुए उडने लगेगा। अगर इन सबके बारे में तुम अपने शब्दों में कह पाओगे तो मै भी अपने अनुभवों के बारे में बताऊँगा।

मेरा सिर! मैं क्या बता सकता हूँ?

पक्षी का नाम लेते ही मुझे कुछ याद आया बताऊँ कि एक दिन क्या हुआ? हरे-भरे खेतों से भरे हमारे गाँव को देखने से लगता है कि चारों ओर हरी चादर बिछी है। दूर से पानी के बहने की कल-कल ध्वनी, हवा की झोंक के कारण वृक्षों से निकलने वाली तरह-तरह की ध्वनियाँ, मन्द-मन्द वायु के कारण लहलहाती हरियाली, रंग-बिरंगे पक्षी और इन सब से ऊपर नीला आकाश! इन दृश्यों को हम प्रतिदिन देखते है! फिर भी मुझे हमेशा-हमेशा के लिए देखते रह जाने की इच्छा होती है!

इन सबका का आनंद लेते हुए खेतों के बीचोंबीच मैं चला आ रहा था। शायद अपनी धुन में रहने के कारण खेत के उस छोर पर खडे गदाय की ओर मेरा ध्यान नहीं गया। दो-चार कदम और बढने के बाद मै ने देखा कि मुरमुरों की टोकरी लिए, धीमी चाल चलते हुए (उसके इस मंदगमन को हम हँस की चाल कह सकते हैं क्योंकि बडा होने के बाद हमारा मित्र "परमहँस" बन गया है।) मेरे मित्र को मैने पहचान लिया। अब मै उसके घने घुंघराले बालों को भी अच्छी तरह से देख रहा हूँ।

"गदाय"! आवाज देते हुए मै आगे बढना चाहा! इतने में ऊपर एक घना बादल आ गया। ऐसे लगा कि सारे

आकाश को शायद वह अपने आप में छिपा लेगा। घने बादल के सौंदर्य का वर्णन मै क्या कर सकता हूँ? इसी बीच वहाँ सफेद पक्षियों का एक झुंड भी उडता आ गया। उनकी सफेदी मुझे दूध या चाँदी की सफेदी जैसी लगी। सफेद पक्षी उडते हुए ऐसे लग रहे थे मानों घने बादल रूपी माँ की अर्चना सफेद पक्षी अपने विविध प्रकार की भंगिमाओं से कर रहे थे। कैसा अनोखा दृश्य था! सोचते-सोचते मेरा ध्यान गदाय की ओर गया। बस, वही हुआ जिसकी मुझे आशंका थी। गदाय दूसरे ही पल अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पडा और उसकी टोकरी में से मुरमुरे चारों ओर बिखर पडे। हाँ, घास पर गिरने के कारण गदाय को चोट तो नहीं आयी। (क्या माँ को नहीं मालूम कि प्यारे बेटे को चोट लगेगी?) बस, एक छलांग मारकर मैं अपने मित्र के पास आ पहुँचा। वैसे ही सुन्दर मुखडा और अब उसपर दुगुनी आभा की झलक। इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द कहाँ? शायद गदाय का चेहरा माँ की "सौंदर्य लहरी" ही है।

इन बातों को कौन समझ सकते है? भला हम भी क्या समझे? समझें भी तो इसे शब्दों में कैसे बाँधें? वास्तव में यह जाने-अनजाने की स्थिति है। इसीलिए गदाय की माँ चन्द्रमणी को एक ओर आश्चर्य होता है तो दूसरी ओर काफी चिन्ता भी होती है। इतना सब कुछ होते हुए भी गदाय थोडी देर के बाद वही हमारा पुराना मित्र दिखने लगता है, जो हम सब के साथ हँसता-खेलता है

और शोर भी मचाने लगता है।

यह सबकुछ होते हुए भी.....कुछ अजनबीपन है हमारे मित्र में। वह हममें से एक दिखने पर भी उसके और हमारे बीच एक हल्का सा परदा हमेशा रहता है, जिसके बारे में.....केवल गदाय ही जाने!

हाँ! परदे का नाम लेते ही एक और चित्र! शिवरात्रि पर्व का नाम लेते ही हमारी मित्र मंडली में उत्साह और उमंग छा जाता है। छुट्टी तो होती ही है। साथ में और कितनी मजेदार बातें! बडों को तो उपवास रखना पडता है। लेकिन हम छोटे बच्चों का क्या! हमारा अपना कलेवा रहता ही है किन्तु साथ में बडों के स्वादिष्ट फलाहार भी हमारे पेट में चले जाते हैं। इन सबके साथ-साथ, पर इन सबसे अलग एक विशेष उत्साह हमारे गदाय में उस दिन दिखता है।

वैसे गदाय इस संसार को कभी भी, बडे लोग कहने के अनुसार श्मशान वैराग्य, के जैसा तो देखता नहीं। इस प्रकृति और सृष्टि में जितना सौंदर्य है, उसका भरपूर आनंद उठाने की शक्ति उसमें है। गदाय के लिए इस संसार के हर एक वस्तु में सौंदर्य दिखता है तो हर एक नाद में 'लय' सुनाई पडती है। कण-कण में रस और गंध है जिन्हें पाकर मन पुलकित हो उठता है। अतः जहाँ

कहीं सौंदर्य दिखे, उसके सहारे आकाश में उड सकने वाला परम हंस है हमारा गदाय! तालाब के बीचों बीच खिलने वाले कमल को हमारे देखने में और गदाय के देखने में बहुत अंतर रहता है। उस कोमल पुष्प को देख शायद गदाय के मन में यह भावना आती होगी कि इस पुष्प को पार्वती माताने शिवजी को मोहित करने के लिए अपने बालों में संवारा होगा। आकाश में गोल-गोल उडने वाले पक्षी अचानक तालाब में तैरती मछलियों को अपने नोक से पकड लेने वाले दृश्यों को देखकर गदाय किसी दूसरी दुनिया में पहुँच ही जाता था। तब तब उसका हाथ, जो मेरे हाथ में था एकदम से छूट जाता था। आँखें कुछ अंदर की ओर मुड जाती थीं। लेकिन होंठों पर वही मधुर मुस्कान!

गदाय को नाटकों से बडा प्यार है। आस-पास के इलाकों में परदा चाहे कहीं भी उठे, लेकिन हमारे मित्र का वहाँ जा पहुँचना अनिवार्य है। कहानी भले राम की हो या कृष्ण की, लेकिन हमारा मित्र देखेगा अवश्य। गदाय के साथ नाटक देखना हमारे लिए एक सुखद अनुभव था। वैसे तो हम सब उसके बिलकुल बगल में बैठने के लिए 'बच्चों के जैसे' ही झगडते थे। गदाय हमें शान्तकर सभी को अपने पास बिठाकर नाटक देखता था। एक आध बार नाटक आरंभ होते ही वह शारीरिक रूप से हमारे बीच में रहकर भी मानसिक रूप से तो कहीं और विचरण करता था।

दूसरों के बारे में कुछ नहीं कह सकता किन्तु मुझे तो नाटक से अधिक, एकटक नाटक देखने वाले गदाय के चेहरे को देखने में ही अधिक आनंद आ रहा था। उसके सुन्दर चेहरे पर न जाने कितने भाव लहराते हैं। सीता मैया को उठाने वाले रावण को देख चेहरा क्रोध से लाल हो जाता था तो राम के हाथ में रावण का वध होते ही चेहरे पर विश्व शांति का भाव झलकता था! कृष्ण की रासलीलाओं को देख उसके चेहरे पर कैसा लास्य? और विश्वरूप संदर्श से उन आँखों में कैसी अनोखी कान्ति? उस प्रकाश को सहन करने की शक्ति मुझे जैसे साधारण मनुष्य में हो सकती है? नहीं। इसीलिए मुझे याद है कि एक दो बार ऐसी स्थिति में मैंने ही अपनी दृष्टि इधर-उधर कर ली। अब "मैया" की झलक उसे दिखे तो कहना ही क्या?.....

नाटक की समाप्ति के बाद भी उसका वही मंदहास! और हम सब के लिए मार्ग निर्देशन हो जाता- "चलो! हम सब अब जाकर माणिकराजा के बगीचे में कच्चे आम तोडकर खाएँगे। एय! शिवराम! तू नोन लाया कि नहीं"? ऐसी बातें क्या हमसे कहने की आवश्यकता पडती है? सब तैयार है! हमारी पूरी टोली चीखते-चिल्लाते, माली की आँखों में धूल झोंककर जितना जी चाहे उतने आम तोडकर मन भर खालेते! गदाय चुन-चुनकर स्वादिष्ट कच्चे आम पहले चखकर देखता था। स्वादिष्ट है तो हमें देता वरना

दूर फेंक देता। यही नियमित रूप से चलता आता था। जूठन के बारे में आप सोच रहे होंगे? जूठन-ऊठन मुझे कुछ नहीं मालूम। वैसे रामायण की कथा सुनाते समय मेरे दादाजी ने एक 'शबरी' के बारे में बताया था कि उसने पहले स्वयं चखकर ही राम को मीठे-मीठे बेर खिलाया था। मैं सोचता हूँ कि भगवान राम ने कितने प्यार से उन बेरों को खाया होगा। गदाय भी ठीक वैसा ही है, जिसकी आँखों में वैसा ही भाव कि ''मुझ पर विश्वास कर! मैं तुम्हें मीठे फल ही चखाऊँगा''।

कोई भी अगर जाकर माणिकराजा से शिकायत करे कि इन बन्दरों की, नहीं-नहीं बच्चों की टोली ने पूरे आम के बगीचों का सत्यानाश कर डाला है तो जानते हैं आप कि माणिकराजा जी का पहला प्रश्न क्या था? यही था कि उस टोली में क्या गदाय है? जवाब में अगर 'हाँ' मिले जो हमें चिन्ता की कोई बात नहीं। क्योंकि वे तपाक से कहे देते, ''अरे बच्चे नहीं खाएँगे तो क्या बडे बुजुर्ग खाएँगे? इतने बडे होकर हम भी अब आम खाने लगेंगे तो पेट नहीं दुखेगा?''

अरे! मैं भी कैसा भुलक्कड हूँ। वैसे मैं आपको शिवरात्रि के बारे में सुनाते-सुनाते कहीं और भटक गया। हमारे गाँव में इस दिन शिवजी की लीलाओं के नाटक खेले जाते थे। बडे उत्साह के साथ हम सब बच्चे

नाटक आरंभ होने के बहुत पहले ही वहाँ जा पहुँचते और बडी तन्मयता से परदों से लेकर नटों तक-बडी बारीकी से परखते थे।

एकबार ऐसे ही नाटक के खेलने के समय हमारे पास एक बहुत 'बडी' समस्या आ पडी। असल में बात यह थी कि शिवजी का भेष धारण करनेवाले नट को अचानक बुखार आ गया और इस बात का पता हमें नाटक आरंभ होने से थोडी देर पहले ही मालूम हुआ। फिर तब का तब अपने चेहरे पर रंग पोथकर कौन शिवजी बनेगा? एक ओर नाटक न खेलने पर हम निराश हो जाते हैं और दूसरी ओर मंच पर जाने के लिए थर-थर कांपने लगते हैं। हम सब ठण्डे पड गए। फिर भी सोचना आरंभ किया क्योंकि हमारे हाथ में समय बहुत अधिक नहीं है। कुछ न कुछ हमें करना ही है। अचानक मुझे लगा कि गोद में बच्चा और गाँव भर में ढिंढोरा। अरे अपना गदाय है तो अब क्या सोचना। यह प्रस्ताव मैंने दोस्तों के सामने रखा कि गदाय को आज हम शिवजी के वेष में देखेंगे। सबने 'हाँ' कह दी।

मैंने यह प्रस्ताव इसलिए रखा क्योंकि हमारे गाँव से होते हुए अनेक साधु-महात्मा जगन्नाथ पुरी की यात्रा पर जाते थे और हमारे गाँव की धर्मशाला में रुकते थे। लंबी-लंबी जटायें और सारे शरीर पर भभूति धारण करने

वाले इन साधु महात्माओं के प्रति गदाय बडी भक्ति और श्रद्धा रखता था। कभी-कभी अपने शरीर पर भी उन्ही के समान भभूती पोतकर अपनी माँ चन्द्रमणि के पास जाकर कहता था "माँ! देख, मै भी सन्यासी बन गया", जिसे सुन माँ के हाथ-पैर कांपने लगते और दिल का धडकना बढ जाता। कहीं यह बात सच निकली तो। लेकिन यह सब थोडी देर के लिए ही। क्योंकि हमारा गदाय तो ममता का साकार रूप ही है। जब उसका हृदय संपूर्ण मानव जाति के प्रेम से भरा हुआ है तो अपनी वात्सल्यमयी माँ के हृदय को कष्ट थोडी ही पहुँचाएगा। इसीलिए माँ को तुरन्त ही सांत्वना देता कि, "नहीं माँ, डरना नहीं। मै तो तुमसे केवल हँसी-मजाक कर रहा था"।

इसीलिए मुझे लगा कि शिवजी का भेप धारण करना गदाय के लिए कोई कठिन काम नहीं। लेकिन हमारे इस प्रस्ताव पर उसने तुरन्त हाँ नहीं कह दी। बहुत देर तक कुछ न कुछ बहाना करता ही रहा। लेकिन मै भी उसे ऐसे-वैसे छोडने वाला थोडी ही हूँ। एक रहस्य की बात केवल मेरे अलावा और कोई नहीं जानता। वह यह है कि गदाय अकेला श्मशानों में घूमता रहता है। मैने जब उससे पूछा कि "तुम्हें डर नहीं लगता"? उसका जवाब था, "जहाँ शिवजी और उनके भूतगण संचार करते है वहाँ 'भय' को स्वयं डरकर भाग जाना चाहिए"। लंबे समय तक वह इन्ही श्मशानों में आँखें बन्द कर बैठा रहता था।

इन सारी बातों का स्मरण दिलाते हुए हमने उसे अन्त में यह कहकर मनाया, ''तुम्हे तो शिवजी बहुत प्रिय है। चलो, आज रातभर इस बहाने तुम उस भोलेनाथ का स्मरण कर सकते हो''।

अन्त में किसी तरह से मान गया। शिवजी का वेष धारण करते ही चमकता हुआ कोमल चेहरा और अधखुली आँखें। शरीर पर भभूति लगाकर ललाट पर तीसरे नेत्र का चित्र बनाते ही गदाय धीरे-धीरे अपनी बाह्य स्मृति खोने लगा। बस, वही हुआ जिसकी हमें शंका थी। अर्ध चेतनावस्था की दशा में वह धीरे-धीरे आकर मंच पर खडा हुआ। उसकी कैसी आकृति थी। ऐसे लग रहा था मानों प्रलय नृत्य करने वाले महाकाल ही हमारे सामने विराजमान हैं। हम पूरे मित्र बडे उत्साह से उसकी ओर देख रहे थे। लेकिन हाय! गदाय न मुँह खोलता है, न हिलता-डुलता है। पर चेहरे पर वही मन्द मुस्कान।

कुछ ही क्षणों के बाद दर्शकों में हलचल मचने लगी। गदाय की मुर्ति को देख कुछ लोग भक्तिपूर्वक शिवस्तोत्र का गान करने लगे। लेकिन बहुत सारे लोग यह बड बडाते हुए वहाँ से चलपडे कि ''अरे। इस गदाय के बच्चे ने तो पूरा खेल ही बिगाड डाला''। लेकिन स्वयं गदाय तो इन सब से दूर अपने एक विलक्षण लोक में विचरण कर रहा था। मैं ही किसी तरह से उसी

अर्धचेतनावस्था की स्थिति में संभालते हुए उसे घर छोड आया। मुझे मालूम है कि गदाय आज रातभर ऐसे ही पडा रहेगा।

मै यहाँ एक बात स्पष्ट कहे देना चाहता हूँ कि शिवजी के प्रति उसकी अपार श्रद्धा-भक्ति और तन्मयता के कारण ऐसा हुआ। वरना हमारा गदाय कैसे-कैसे भेष धारण कर बडे से बडे लोगों को भी अच्छा सबक सिखाता था।

यहाँ मै आपको एक घटना सुनाऊँगा तो इसे आप स्वयं मान जाएंगे। हमारे गाँव के बूढे-बच्चे, स्त्री-पुरुष सब गदाय से अमित प्रेम करते है। वैसे गोकुल के नटखट बालकृष्ण के बारे में हमने पढा है। गदाय तो उस बालकृष्ण को भी भुला देता है। गदाय के गान सुनने के लिए और नृत्य देखने के लिए हम सब तरसते थे। गाँव की स्त्रियाँ और बच्चे गदाय को घेरकर बैठ जाते थे। लड़कियों के मन में यह भाव कभी नहीं आता था कि हम लड़कियाँ है और गदाय लड़का अतः उससे दूर रहना चाहिए। गदाय की आँखें मासूमियत से भरी रहती थीं। उसके बोलने में और चाल-चलन में स्फटिक जैसी स्वच्छता! और बिलकुल बच्चों जैसी सरलता! जानते है आप कि हमारी सीता दीदी क्या बोलती थी? हमारे मन मे यह बात कभी आती ही नहीं है कि गदाय लड़का है।

उसे तो हम अपने में से एक मानते है। सबसे विचित्र बात यही है कि जो बातें हम अपने माता-पिता से नहीं कह सकते थे, उन सारी बातों को हम गदाय से निस्संकोच कहे डालते थे।

लेकिन हर गाँव में कुछ सनकी लोग भी अवश्य होते हैं, जिन्हें स्त्रियों का बाहर आना-जाना बिलकुल पसंद नहीं। स्त्रियों को परदे में रखकर और पिंजडों में बन्दकर वे बडे प्रसन्न रहते है कि हम इन स्त्रियों की रक्षा कर रहें है। हमारे दुर्गादास मामा भी उन्हीं लोगों में से था जो अपने घर की स्त्रियों को न बाहर जाने देता था और न पुरुषों को बैठकखाना पार करने देता था। लेकिन उसके घर की स्त्रियों को गदाय के बारे में सुन-सुनकर उसे देखने की अदम्य इच्छा थी।

वैसे दुर्गादास मामा हमेशा डींग मारता था कि कोई भी पुरूष, पुरूष क्या आखिर सूर्य भगवान के लिए भी मेरा जनाना देखना असंभव है। लेकिन गदाय ऐसे-वैसे छोडने वालों में से नहीं है। हमारे गदाय का सोचना है कि संसार की सारी स्त्रियाँ साक्षात भगवती माँ है। वह मानता था कि स्त्रियों को पढना चाहिए और बाहर की दुनिया के बारे में जानना चाहिए। उसे विश्वास यह भी था कि इन स्त्रियों के द्वारा ही जगत् की जननी 'माँ' को अनेक महान् कार्य करवाने है। उसे लगा कि अब मामा

को एक सबक सिखानी ही है।

शाम के समय हमेशा की तरह एक दिन हम सभी बच्चे चीख-पुकार लगाते हुए रास्ते में खेल रहे थे। दूर से बुरके में एक स्त्री हमारी ओर धीरे-धीरे चली आ रही थी तो हम सब उसे पहचानने की कोशिश में लग गए। हमारे पास आकर वह बडे संकोच के साथ बोली कि, ''देखो बच्चों! मेरे लिए एक समस्या आ गयी। मैं जयराम बाटी के घर आयी, अब तो मेरे सब साथी निकल गए और शाम भी ढल रही है। इसलिए मुझे आज रात यहीं कहीं रुकना पडेगा। किसी के घर में आज रात ठहरने के लिए मुझे थोडी सी जगह मिलेगी''?

इसे सुन हम सब परेशान हो गए। हमारे घर, (घर क्या झोंपड़ियाँ कहिए तो अच्छा होगा) हमारे ही लिए कम पड़ते थे। पूरे गाँव में एक माणिकराजा की और दूसरे दुर्गादास मामा की ही हवेलियाँ बड़ी-बड़ी थीं। लेकिन माणिकराजा का घर दूर था। दुर्गादास मामा का घर बिलकुल सामने था। इसीलिए हम सब बच्चे उस स्त्री को मामा के घर ले गए। उसकी ओर देखे बिना ही हमारी बातें सुनकर मामा ने अंदर जाने की आज्ञा दी। हम सब बच्चे वापस घर चले गए।

हर रात हम अपना खाना खाकर गदाय के ही पास

जाकर बैठ जाते थे। उस रात को भी हमने ठीक वैसे ही किया। लेकिन गदाय की माँ बडी बेचैन थी और बोली, ''अरे शिवराम! रात के आठ बजगया और गदाय अभीतक घर नहीं लौटा। उसके पिताजी की पूजा भी हो गयी। लेकिन पता नहीं यह कहाँ भटक रहा होगा? मुझे बहुत डर लग रहा है।''

वैसे माँ से कुछ बोले बिना गदाय इतनी रात तक कहीं नहीं रूकता है। डर और घबराहट के मारे हम सभी बच्चे गली-गली में गदाय को आवाज देते हुए ढूँढने लगे। मामा के घर के पास आकर भी हमने 'गदाय' की आवाज दी। बस, हमारी आवाज सुनते ही अन्दर से ''हाँ'' कहती हुई वही शाम की बुरकेवाली स्त्री आ पहुँची। हम सब हैरान। बुरका निकालते ही सामने हमारा गदाय।

यह सब तमाशा देखकर दुर्गादासमामा पहले जोर-जोर से सबको डाँटने लगा। लेकिन गदाय के सामने कोई गुस्सा कर ही नहीं सकता था। इसलिए गदाय की आँखों में देखते ही मामा का भी गुस्सा उतर गया और दूसरे ही पल मामा को बात समझ में आ गयी कि गदाय ने उसे क्या सिखाना चाहा। बस, ठहाका मारकर खूब हँसने लगे। उस दिन के बाद मामा के घर की महिलाओं को पिंजडे से मुक्ति मिल गयी।

ऐसी कितनी मजेदार बातें मै बताता जाऊँ? ऐसे हम सब बच्चों से घुलमिल जाने के बाद भी गदाय में अपनी कुछ खास विशेषता थी। कभी-कभी मुझे लगता था कि वह हमसे वार्तालाप कर रहा है फिर भी वह हमारी बातें सुन नहीं रहा है। अगर हम पूछें कि ''क्या बात है मेरे दोस्त''? तो हँसते हुए टालने के अंदाज में उल्टा हमसे ही पूछ बैठता कि ''कैसी बात'' और ''कौन सी बात''?

जानेते है आप कि एक बार क्या हुआ? हमारे गाँव की एक महिला को देवी-देवताओं के प्रति प्रगाढ भक्ति थी। सदा स्तोत्र पाठ में मग्न वह महिला कभी-कभी इसी तन्मयता में बेहोश भी हो जाती थी। उसे देखकर गाँव के बडे लोग कहते थे कि वह देवी या देवता उसके शरीर पर आ गये है। लेकिन हम बच्चे तो बहुत डर जाते थे। पर गदाय निडर होकर उसके सामने बैठा ही रहता था और उसे बडी तमन्ना थी कि ऐसे ही देवी-देवता मुझ पर भी आएँ। पूजा पाठ कहीं भी हो, लेकिन गदाय उस काम को बडी बारीकी से परखता था। इतना ही नहीं हमारे देखने में और उसके देखने में बहुत बडा अन्तर यह था कि मानो कण-कण में वह माँ को ढूँढने का प्रयत्न कर रहा हो! कठिन से कठिन बातों को भी हमें आसानी से समझा देता था।

आप इस भ्रम में मत रहिए कि भविष्य में

''परमहंस'' बनकर गदाय हमें भूल गया होगा। नहीं, कमलपकूर की छोटी सी छोटी बात को भी अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखा था। हाँ, एक बार उसने हमें कुंडलिनी शक्ति के बारे में बताया था। (इसशक्ति के बारे में मैं कुछ नहीं बता सकता हूँ क्यों कि मुझे तो मेरे मित्र गदाय के अलावा और कुछ नहीं मालूम।) ध्यान की अवस्था में वह शक्ति प्रत्येक स्थिति में कैसे लगती है बताते हुए गदाय ने कहा कि वह शक्ति कभी हवा में उडने वाली पंछी की तरह होती है तो कभी पानी में डुबकियाँ लगाने वाली मछली की तरह, तो कभी एक डारी से दूसरी डारी पर कूदने वाले बंदर की तरह। इतनी सारी बातों को जानने वाला गदाय बहुत बडा बनने के बाद भी अपनी माँ के गोद में छोटा बच्चा ही बन जाता था।

कमलपकूर में हमारे खेल-कूद को क्या हम कभी भूल सकते है?

वैसे हमारी मित्र मंडली के बच्चे बहुत सारी बातों में नासमझ ही थे। पर एक गदाय उन सभी विषयों को भी बडी आसानी से समझ जाता था। फिर भी हम सबसे वह कितना प्यार करता था। शायद वैसा प्यार हमारे माता-पिता भी दिखा नहीं सकते थे। हमारे संबंध जितने कोमल थे उतने ही दृढ भी थे।

भले ही दुनिया गदाय के बारे में बहुत सारी बड़ी-बड़ी बातें बताएँ लेकिन हमें तो उसकी ममता की याद हमेशा के लिए रहेगी। लेकिन हमारे मन की भावनाओं को हम शब्दों में व्यक्त कर नहीं सकते।

चलिए अब मैं एक चमत्कार के बारे में आपको सुनाऊँगा जिसके बारे में आज तक मुझे कुछ समझ में नहीं आयी।

मै ने आपसे बहुत पहले ही बता दिया था कि गदाय हमारे पूरे गाँव के लोगों का आँख का तारा था। हम सब बच्चे तो उसके लिए जान भी दे सकते थे। लेकिन पूरे गाँव में श्रीनिवास न्यारा था। अरे, मैंने तो आपको श्रीनिवास के बारे में बताया ही नहीं। श्रीनिवास हमारे गाँव में छोटे-छोटे शंखों से ऐसी सुन्दर-सुन्दर चूडियाँ बनाता था कि लोग दूर-दूर से आकर मिनटों में खरीदकर ले जाते थे। उसके हाथों में ऐसा कमाल था।

उसे गदाय के प्रति प्रेम था। प्रेम से भी बढकर अपार भक्ति भी। श्रीनिवास गदाय को ठीक वैसे ही देखता था जैसे कि हम मंदिर में देवता की मूर्ति को बडी भक्ति से देखते है। कितनी ही बार मैंने अकेले में देखा है कि गदाय के छोटे-छोटे चरण चिह्नों को श्रीनिवास बडी तन्मयता से चूमता था। वैसे मुझे तो यह कुछ विचित्र नहीं लगा।

एक दिन बडे तडके ही गदाय मेरे पास आ पहुँचा और बोला, ''शिवराम, आज मालूम नहीं 'क्यों' मुझे श्रीनिवास ने अपने घर बुलाया है। मैं जा रहा हूँ और काम होते ही माणिकराजा के बगीचे में पहुँच जाऊँगा। वहीं पर तुम मेरी राह देखना''। ठीक है। मैंने सिर तो हिलाया लेकिन मन से नहीं। इसे शायद गदाय ने भांप लिया होगा इसीलिए बोला- ''ठीक है, तू भी श्रीनिवास के घर आ जाना। लेकिन दूर से ही देखना कि वहाँ क्या होने वाला है''? चलो, मैं मान गया।

सवेरे शायद दस बजा होगा। हरियाली से उडता आ रहा मंद-मंद समीर शरीर को कोमल स्पर्श दे रहा था। चारों ओर मोहक वातावरण। गाँव के स्त्री-पुरूष अपने कामों में लग गए।

धीरे-धीरे दबे पाँव मैं श्रीनिवास के घर पहुँचा जो गाँव से थोडी सी दूरी पर है। दीवार के पास झाडियों के बीच मैं खडा हुआ ताकि मैं सब कुछ भली-भाँति देख पाऊँ लेकिन मुझे कोई न देखे। दीवार से मेरा कद छोटा होने के कारण मैं दोनों पैर ऊपर उठाकर अंदर झांका तो एक अद्‌भुत दृश्य दिखा। मालूम नहीं कब तैयार किया होगा लेकिन श्रीनिवास ने अपने आँगन के बीचों बीच एक ऊँचा आसन तैयार किया। चारों ओर सुंदर रंगोलियाँ बनायी। ठीक भगवान की पूजा के लिए जैसी तैयारी की

जाती है वैसी ही तैयारी वहाँ दिख रही है। उसने हाथ पकडकर गदाय को आसन पर बिठाया। चंदन और कुंकुम माथे पर लगाया। अगरबत्तियों की महक चारों ओर छा गयी। आरती उतारी और प्रसाद भी चढाया। मुझे यह सब देखते-देखते हैरानी हो रही थी।

गदाय के मुख पर मन्दहास। मेरे मित्र के चेहरे को ऐसे चमकते हुए मैंने आजतक नहीं देखा था। राम, शिव, कृष्ण इन सबका मिला-जुला प्रकाश और तेज.....मै तो ओह! कुछ बता ही नहीं सक रहा हूँ।

अब आप यह सब सुनकर इस सोच में पड गए होंगे कि इस छोटे से बालक को इतनी सारी बातों का कैसे पता? मुझे आप उतना छोटा मत समझिए। एक बार हमारे खुदीराम दादा ने मुझे एक चित्र दिखाकर समझाया था- "अरे शिवराम! जानते हो यह किनका चित्र है? यह है भगवान कृष्ण का विश्वरूप। यह सारा संसार उन्हीं में समाया हुआ है। इस प्रकाश को देखो। इसे देखने पर लगता है कि आकाश में एक साथ सैकडों सूर्य चमक रहे हों"। तब से मै इन बातों को भूला ही नहीं।

आज भी मुझे उन्हीं बातों की याद आयी। लेकिन गदाय का प्रकाश कुछ डरावना नहीं था बल्कि उसके तेज में है "शांति"। श्रीनिवास जो-जो उपचार कर रहा है, उन

सबको गदाय बडी प्रसन्नता से सहज रूप में ग्रहण कर रहा है। श्रीनिवास ने अंत में हाथ जोडकर गदाय से यों कहा-''अब मेरी आयुढल गयी है। कई दिन और नहीं जिऊँगा। भविष्य में महान कार्य करने के लिए ही तुमने यहाँ जन्म लिया है। मुझे मालूम है कि भगवान नारायण ही तुम्हारे रूप में यहाँ हमारे बीच में हैं जो हम सबका सौभाग्य है। लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि आगे की तुम्हारी अद्‌भुत लीलाओं को मैं अपने इन नेत्रों से देख नहीं पाऊँगा। इसीलिए तुम्हारे इस बालक रूप का ही मैं अर्चना कर रहा हूँ। तुमने मुझे इसके लिए अनुमति दी है जो मेरे इस जन्म को सार्थक बना दिया है। बस, इससे अधिक मैं और कुछ कह नहीं सकता''। कहते-कहते श्रीनिवास गदाय के चरण स्पर्श कर हाथ जोडकर बैठा और उसकी दोनों आँखों से गंगा-यमुना का अजस्र प्रवाह।

अरे! यह कैसा अद्‌भुत दृश्य है कि एक ओर बालक गदाय और दूसरी ओर बूढा श्रीनिवास! वैसे तो श्रीनिवास था बहुत गरीब। किसी को छोटा से उपहार देने में भी असमर्थ। किन्तु उसके समान श्रद्धा और भक्ति दिखा सकने वाले हमें बहुत कम मिलते हैं। लेकिन आज वह सबसे बडा भाग्यशाली हो गया है कि उसने गदाय अर्चना रूपी उपहार को स्वयं पा लिया था। गदाय की महानता को पहचानने वालों में से श्रीनिवास का ही नाम सबसे पहले उल्लेखनीय है।

वैसे तो मुझे इस बात का बडा दुःख है कि सभी बडे लोग श्रीनिवास जैसे नहीं होते। मैं आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताऊँगा जिससे आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि से बुजुर्ग कितने सनकी.....नहीं-नहीं मूर्ख होते हैं।

क्या आप जानते हैं कि गदाय के जन्म लेते ही उसका सुन्दर मुखडे को सबसे पहले देखने का सौभाग्य किसे मिला था? धनमणि धाय को। धनमणि हमेशा गदाय के पैदा होने के समय की बात को दुहराती रहती है जिसे हम बार-बार सुनकर भी आश्चर्य में पड जाते हैं। उसने बताया, ''गदाय के पैदा होने के बाद मैंने उसकी माँ का उपचार कर देखा तो जानते हो बच्चों, यह नन्हा सा बालक कहाँ था? चूल्हे में। हाँ-हाँ! चूल्हे के राख में लोटकर ऐसा लग रहा था मानो भभूति लगाकर शिवजी स्वयं छोटे बालक क रूप में हमारे सामने हैं। बाकी बच्चों के समान यह गदाय पैदा होते ही रोना-वोना कुछ नहीं। बस, मासूमियत से भरा निर्मल चेहरा था उसका।'' गदाय की माँ और धनमणि दोनों ने एक ही विषय को स्पष्ट देखा कि कभी-कभी गदाय एक नौजवान जैसा लगता तो दूसरे ही पल बिलकुल नन्हा-मुन्हा सा बालक बनकर झूले में सिमट कर सो जाता।

अपने जन्म के समय इतनी सहायता करने वाली

धनमणि से गदाय को बेहद प्यार था। उसे एक धाय कभी न समझा बल्कि माँ के बराबर का प्यार बाँटा। इसीलिए उसने गदाय से एक अपूर्व वर माँगा। ''बेटे गदाय! मैं तुम्हे समझ तो नहीं सकती। लेकिन मुझे इतना अवश्य मालूम है कि तुम कोई सामान्य बालक नहीं हो। जब तुम्हारा जनेऊ संस्कार होगा तो पहली भिक्षा मुझसे लेने का वचन दोगे''? ऐसे प्यार भरे वचन को गदाय कभी ठुकरा सकता था? नहीं। उसने तुरन्त हाँ तो भर दी, लेकिन जनेऊ संस्कार के समय यही वचन बहुत बडा किस्सा बन गया।

जनेऊ संस्कार के दिन इस बात को सुनते ही गदाय के बड़े भाई रामकुमार अपने आपे से बाहर होकर चिल्ला पड़े- ''अरे! हम तो ऊँचे कुल के ब्राम्हण है और रीति-रिवाजों का पालन करना हमारे लिए बहुत आवश्यक है। यह सब जानते हुए भी पहली भिक्षा उस औरत से लेने के लिए तुमने वचन कैसे दे दिया? क्या तेरी मति मारी गयी थी? इससे हमारी जाति चली जायेगी। यह सब नहीं चलेगा।''

लेकिन गदाय के लिए वचन आखिर वचन ही है, जिसे निभाना हीं पडेगा। गदाय का हमेशा यही कहना है कि वचन निभाओ तो भगवान अवश्य मिल जाएंगे। इसीलिए उसने भी ठान ली कि धनमणि से ही पहली भिक्षा स्वीकार करेगा। लेकिन उधर बुजुर्ग भी अपनी बात

पर अड़े हुए थे। खैर, इतना तो स्पष्ट है कि वे सब भले ही गदाय को डाँटें-डपकें लेकिन वे उससे बेहद प्यार भी करते थे। लगता था कि गदाय में एक अनोखा आकर्षण था, जो सभी को अपने वश में कर लेता था। गदाय ने अपनी पहली-भिक्षा धनमणि से कैस ग्रहण की इसका वर्णन मै कैसे करूँ?

वैसे ही मेरे मित्र के तन का रंग बहुत गोरा था। उसदिन मुंडन करवाकर पंचशिखाओं के साथ और भी सुन्दर लग रहा था। आज इस वेष में अपने मित्र को देख मुझे भगवान वामन की कथा याद आयी। मेरे दादाजी ने कहा था कि भगवान वामन कद में बहुत छोटे थे लेकिन उन्हे अपने नन्हे से कदम रखने के लिए तीनों लोक कम पड गए थे। धनमणि के भाग्य का क्या कहना। वटु गदाय ने उसके सामने खडे होकर "भवती भिक्षां देही"! कहा और अपनी झोली आगे पसारी। इससे गदाय के बडप्पन के अनुभव से भी अधिक धनमणि के भाग्य पर थोडी सी ईर्ष्या अवश्य हो रही थी।

ऐसी बातें जनमभर बताते हुए भी मुझे थकान नहीं होती क्योंकि दुहराते-दुहराते मुझे भी आश्चर्य होने लगता है। वैसे आयु में छोटा गदाय बुजुर्गो का बुजुर्ग बनकर उन्हें पछाड सकता था। वैसे प्रह्लाद की कहानी हमने खुदीराम दादा से सुनी थी। दादा ने हमें बताया था कि बालक

प्रह्लाद ने छोटी सी आयु में ही संपूर्ण 'ज्ञान के सार' को ग्रहण कर लिया था, वह सार क्या था? 'विष्णु की भक्ति' थी। मुझे प्रह्लाद के बारे में बहुत अधिक तो नहीं मालूम लेकिन दावे के साथ कह सकता हूँ कि हमारा गदाय बिलकुल उस प्रह्लाद के जैसा ही था जो 'ज्ञान के सार' को जानता था। विषय भले ही कठिन हो, लेकिन मुझ जैसे बुद्धू को भी गदाय आराम से समझा सकता था।

गदाय से किसी ने एक बार प्रश्न किया था कि ''माया'' क्या होती है? हम मूर्ख इस माया को समझ नहीं सक रहे हैं। इस माया के बारे में समझाने के लिए गदाय ने एक सुन्दर उदाहरण दिया- ''अरे, इसे समझना उतना कठिन नहीं है जितना तुम सोचते हो। तुमने राम, लक्ष्मण और सीता के वन जाने का चित्र देखा है? घना ज़ंगल होने के कारण तीनों एक साथ नहीं जा सकते हैं। इसलिए आगे राम, बीच में सीता मैया और उनके पीछे लक्ष्मण भैया चलते हैं। लक्ष्मण से तो भैया राम का मुँह देखे बिना रहा नहीं जाता था, जबकि बीच में सीता के कारण अवरोध पैदा होता है। इसीलिए जब लक्ष्मण को अपने भाई को देखने की बेहद बेचैनी होती है सीता माई के चरणों की ओर देखते हुए विनम्र होकर कहता है- ''भाभीजी क्या आप थोडी सी सरकेंगी? मुझे भैया दिख नहीं रहे है''। सीता को मालूम था। अतः मुस्कुराती हुई रास्ते से हट जाती थीं जिससे लक्ष्मण जी भरकर अपने भाई के

चेहरे को देख सकता है.....''इसमें भगवान राम है तो लक्ष्मण उनका भक्त! लेकिन बीच में सीता के होते हुए भगवान को देखना कैसे संभव है? इसलिए मान सकते हैं कि भगवान को देखने में आनेवाली रुकावट ही 'माया' है। लेकिन सीता और राम तो जगत् के पाता-पिता है और हम पिता के पाने में माता को रुकावट नहीं मान सकते। वैसे भी माँ नहीं तो पिता नहीं और पिता नहीं तो माता का क्या अस्तित्व? अत: हम पिता को देखने की तीव्र इच्छा को लेकर माँ से प्रार्थना करेंगे तो बीच की रुकावट हट जाएगी। अब आयी बात समझ में''?

अरे, मुझ जैसे बुद्धू को भी ऐसे आसान शब्दों में कोई धीरे-धीरे समझायेंगे तो सारी बातें समझ में आ ही जाएंगी।

असल में इसके बारे में मै इसलिए बता रहा था क्योंकि हमारे गाँव के सभी बडे-बडे विद्वान और पंडित किसी एक बात को लेकर एक दिन बहुत ही ऊँचे-ऊँचे स्वरों में वाद-विवाद कर रहे थे। विषय क्या है और बहस किसके बारे में है, हम बच्चे क्या जाने! इतने में उनमें से एक बुजुर्ग उठा जिसके कानों में सोने की बालियाँ लटक रही थीं। माथे पर कुंकुम और चन्दन की बहुत बडी टीका थी। उनकी मोटी-मोटी आँखें थी और सिर पर मोटी सी चोटी बंधी थी। उन्होंने अपनी आवाज उठाकर सबको

संबोधित करते हुए कहा "अब तो इस विषय के बारे में चर्चा करना व्यर्थ है। इसका कोई उत्तर ही नहीं है"। जब वे बोल रहे थे तो उनकी चोटी और बालियों का हिलना हमारे लिए बहुत बडा आकर्षण था। विषय भले कुछ भी हो। बुजुर्गों की इस बैठक के पास ही हम बच्चे खेलने में व्यस्त थे। गदाय वैसे हमसे खेल ही रहा था लेकिन मुझे लगा कि विद्वानों की चर्चा उसे आकर्षित कर रही है। मुझे मालूम है कि गदाय किसी भी विषय को एक बार सुन लेता है तो समझ भी लेता है। बडी चोटी और टीका वाले पंडितजी की इस घोषणा के बाद उन्हीं के पास जाकर गदाय ने उनके कानों में कुछ फुस फुसाया। लेकिन उन्होंने इस बच्चे की ओर कुछ ध्यान ही नहीं दिया। लेकिन गदाय ने भी उन्हें छोडा नहीं और अपनी बात दुहराई।

एक क्षण के बाद पंडितजी ने ऐसे चीखा कि मानों बिच्छू ने डंक मारा हो और बडी उत्सुकता से बोल पडे "सुनो!सुनो! हमारी समस्या को इस नन्हे से बालक ने परिष्कार किया है। अरे, यह कैसा अद्भुत है"।

इसके बाद क्या कहूँ मैं? गदाय को सभी लोग प्यार करने लगे और बूढे पंडितजी ने तो उसे अपने गोद से उतारा ही नहीं! उनकी आँखों से आँसू बहते ही जा रहे थे।

इतने में गदाय की माँ वहाँ उसे ढूँढती आ पहुँची। मैने ही जाकर उन पंडितों को बडे गर्व से बताया कि यही हमारे मित्र गदाय की माता चंद्रमणि है। यह सुनते ही, जानते है आप कि क्या हुआ? ऐसे बडे-बूढे लोग भी माँ के सामने दण्ड़वत प्रणाम करने लगे और बोले- ''माँ। आपका यह गदाय कोई मामूली सा बालक नहीं है। जिस सूक्ष्म बात को बडे-बडे पंडित नहीं समझ सकते है, उन्हें गदाय समझ सकता है। भविष्य में यह महान् बनेगा। सच, ऐसे होनहार बालक को जन्म देने वाली आप स्वयं कितनी महान् हैं!

माँ को इन सारी बातों से क्या वास्ता? उसके मन में केवल एक ही बात है कि आज मेरे बेटे को इतने सारे लोगों की नजर लग गयी है। इसलिए झट पट हाथ में राई नोन लेकर उसकी नजर उतारने में लग गयी। गदाय तो माँ के सामने मुस्कुराते हुए खडा रहा क्योंकि किसी का भी मन वह दुःखाना नहीं चाहता।

....

ये सारी बातें सुनकर अब आप इस भ्रम में पडगए होंगे कि ऐसा होनहार बालक को पढाई से बहुत लगाव रहा होगा। लेकिन यहाँ आप मार खा गए। गदाय को वैसी पढाई ही अच्छी लगती है जिसमें राम, कृष्ण, प्रह्लाद जैसे महान् लोगों और भक्तों की कहानियाँ रहती है। गदाय को

पहाडे, गिनती, जोडना-घटाना-ओह! ऐसी पढाई तो बिलकुल पसंद नहीं। जानते हैं हमारा स्कूल कैसा था? छोटे-छोटे बेंचों पर हम विद्यार्थी बैठते थे। मास्टरजी द्वारा कहे गए पाठों को दुहराने के साथ-साथ कभी-कभी जोर-जोर से चिल्लाकर मास्टरजी को हैरान करना भी हमारी पंढाई का ही एक अंग था।

अब आप तो जानते ही हैं कि गदाय हम सब को माणिकराजा के बगीचे में ले जाता था। वहाँ हम सब मिलकर शिवजी की लीलाएँ, राधाकृष्ण का विरह आदि दृश्यों का अभिनय करते थे। इन सब में से गदाय को गोपियों का विरह और कृष्ण से बिछुडते समय उनका अपार दु:ख-ये दोनों अत्यधिक प्रिय प्रसंग थे। जब हमारे दादाजी श्रीमद् भागवत पढकर कृष्ण के प्रति राधा के प्रेम को समझाते थे तो हम बहुत कम ही समझ पाते थे। लेकिन गदाय के अभिनय को देखने के बाद बहुत कुछ समझ सकते थे क्योंकि कृष्ण से विछुडी राधा के विरह का अभिनय गदाय बडे चाव से अपना पूरा मन लगाकर करता था। कहा जाता है कि बीन के बजाते ही साँप नाचने लगता है और कृष्ण की मुरली वादन सुन पेड भी सिर हिलाते थे। गदाय के गान को सुनने से पहले मैं इन सारी बातों को झूठ मानता था। किन्तु अब! मुझे मालूम नहीं कि मेरे मित्र के स्वर में क्या जादू है कि उसका गाना सुनते ही हमारे मन में कुछ अजीब बेचैनी सी हो

जाती थी। मीरा के भजन में स्वयं मीरा और राधा जैसी विरहिणियों का चित्र हमारे सामने आ खडा हो जाता था-

''प्यारे दरसन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय।....
आकुल व्याकुल फिरूँ रैन दिन, विरह कले जो खाय।
दिवस न भूख नींद नहिं रैना, मुख सूं कथत न आवै बैना।।''

मालूम नहीं क्यों, किन्तु कृष्ण से बिछुडी राधा की स्मृति आते ही हम सब बच्चे सिसक-सिसक कर रो पडते थे।

बीच में ही गाना बन्दकर गदाय हमसे पूछता था, ''अरे! तुम रो क्यों रहे हो? यह तो नाटक का एक दृश्य है''। देखा आपने? गाना गाकर खुद उसने हमें रुलाया है और अब हमें समझा रहा है।

गदाय में खूबी यह है कि हम बच्चे क्या, स्वयं हमारे मास्टरजी भी उसके जादू में आ गए। एक बार मुझे याद है कि ऐसे ही नाटक खेलते-खेलते हमने लगातार चार-पाँच दिन तक स्कूल की ओर झाँका तक नहीं। एक दिन हमें लगा कि अब मास्टरजी हम पर गुस्सा करेंगे, इसलिए स्कूल चल दिए। हमारी टोली को देखते ही मास्टरजी आग बबूला हो गए और हम सब को खूब डाँट भी पडी। गदाय तो उनको जान से भी प्यारा था। इसलिए

उसे कुछ पुचकारते हुए, पास बिठाकर समझाया- ''देखो गदाधर! इन बन्दरों को लेकर तुम पढाई के समय भी बाग-बगीचों में क्यों खेलते रहते हो? अच्छा मुझे एक बात बता कि तुमने ऐसा क्या जादू किया इन बच्चों पर कि इन्हें स्कूल आने की चिन्ता ही नहीं होती''? गदाय मंदहास करते हुए कहा- ''मास्टरजी दिखाऊँ''? मास्टरजी ने जैसे ही 'हाँ' कह दी, हमारी ओर गदाय ने संकेत किया कि हम सब तैयार! हमारी कक्षा के छोटे-छोटे मेजों को और मास्टरजी की कुर्सी को एक ओर जल्दी-जल्दी सरका दिया। आजकल हमारे पास हम कुछ रंग तैयार रख रहे हैं, उन्हें हमने चटपट मुख पर पोत ली। हम चार-पाँच लडके गोपी बने और हमारे बीच में गदाय अपने जादू भरे स्वर में मीरा का भजन गाते हुए राधा बना।

आज इतने दिनों के बाद भी मुझे मेरे मास्टरजी की उसदिन की अचेतनावस्था आँखों के सामने स्पष्ट दिख रही है। मास्टरजी तो एकटक गदाय को देखते ही रह गये। गदाय के स्वर का जादू शायद उनपर इतना छा गया कि बडी देर तक वे अपना सिर हिलाते रहे। गदाय ने जब तक यह नहीं कहा कि ''मास्टरजी! बाग-बगीचों में हम ऐसे ही नाटक खेलते-खेलते हम अपना समय बिताते है''। तब तक मास्टरजी अपनी अचेतनावस्था से बाहर नहीं आए। उनकी अश्रुधारा उनके आनंद का साक्ष्य हमें देने के लिए उमड रही थी। कुछ क्षणों के बाद मास्टरजी भर्राए हुए स्वर में

बोले– ''अरे गदाधर! आजतक मैंने तुम्हारे जैसे अभिनय कर रुलाने वाले को नहीं देखा है''। फिर हँसते हुए बोले ''इतनी जादू है तुम्हारे पास। इसीलिए ये बन्दर तुम्हारे पीछे–पीछे घूमते है और तुम्हे छोडते नहीं''। बस, उस दिन से हमें मास्टरजी का डर भी समाप्त। अब वे हम पर चिल्ला नहीं पडते बल्कि हमसे प्यार करते हैं। एकबार गदाय ने हमसे कहा था कि गरू दो प्रकार के होते है– बाधा देनेवाले और बोधन करने वाले।

इन सारी शरारतों के बीच भी मैंने एक बात की ओर ध्यान दिया कि शरारत भले ही करे, लेकिन गदाय अपनी माँ का हाथ अवश्य बटाता था। माँ के प्रति इतनी श्रद्धा रखने वाले बच्चों को हम बहुत कम बार ही देख सकते हैं। सब्जियाँ लाता था, बर्तन धोता था, पूजा की सामग्री साफ करता था और घर में झाडू–पोंछा भी करता था। किसी भी प्रकार के काम से मुँह नहीं मोडता था, एक बार शारदा भाभी ने गदाय के (जो तब तक रामकृष्ण बन गया था) पैर दबाते हुए कुतूहलवश प्रश्न किया– ''मेरे बारे में आप क्या सोचते हैं''? जानते है इसका समाधान क्या था? ''मेरे पैर दबाते हुए सेवा करने वाली तुम, मुझे जन्म देने वाली मेरी माँ और इस संपूर्ण जगत् की जननी– इन तीनों में कोई भेद नहीं है। बस, इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ''?

यह है माँ के प्रति हमारे गदाय की श्रद्धा। भले ही उसने अनेक देवी-देवताओं को अपने वश कर लिया हो लेकिन स्वयं तो 'माँ' का भक्त ही बना रहा।

गदाय को अपने बाबा के प्रति भी वैसी ही अपार श्रद्धा-भक्ति थी। वैसे हम बच्चे बाबा से कुछ दूर ही रहते थे लेकिन वे हम सबसे उतना ही प्यार करते थे जितना कि गदाय से! एक बार गदाय ने अपने बाबा के बारे में एक आश्चर्यजनक बात बतायी "देखो शिवराम तुम तो जानते ही हो कि बाबा कभी न असत्य बोलते हैं और न किसी के सामने हाथ ही पसारते हैं। बाकी पुजारियों के समान धन और धान बटोरने के लिए वे कभी चापलूसी भी नहीं करते हैं। तुझे मालूम है न, कि झूठी गवाही देने के लिए बाबा तैयार नहीं थे इसीलिए 'देरेपूर' गाँव के जमीन्दार ने हमें वहाँ से निकाल दिया तो हम यहाँ आकर जीवन बिता रहे हैं। बस, तब से बाबा ने अपना पूरा ध्यान भगवान के पूजा-पाठ में ही लगा दिया। बडे सबेरे ही उठकर घर में पूजा के लिए पूरी तैयारी कर स्नान करने चले जाते हैं। बाद में फूल चुनने के लिए निकलते हैं तो मैं भी पीछे-पीछे जाता हूँ।

एक बार ऐसे ही बाबा के साथ फूल चुनने के लिए मैं भी गया तो मैंने एक चमत्कार देखा। वैसे हमारे बाबा ऊँचे कद के आदमी थे। फिर भी पेड के सबसे ऊपर की

डाली के फूलों को चुनने के लिए भी मैंने उन्हें कभी डाली को अपनी ओर झुकाते हुए नहीं देखा। मैंने इसी के बारे में बाबा से पूछा ''बाबा! मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है। आप ऊँची से ऊँची डालियों को भी अपनी ओर खींच नहीं रहे हैं, फिर भी फूल आप बडी आसानी से चुन रहे हैं। मुझे ऐसे कैसे भ्रम हो रहा है कि वहाँ कोई बैटकर आपकी ओर डाली को झुका रहा है। यह क्या जादू है? मै कुछ समझ नहीं सक रहा हूँ''।

जवाब में बाबा मेरी ओर मुस्कुराते हुए देखकर बोले, ''बेटा, इसमें कोई जादू या चमत्कार नहीं है। दुबारा देख लेना, बात अपने आप तुम समझ जाओगे''। मैंने बडी सावधानी से जो देखना आरंभ किया, आँखें फाड़-फाड़कर देखता ही रह गया। क्या बताऊँ मै? इस जगत् की जननी 'माँ' ही छोटी बच्ची बनकर मेरे बाबा से धीरे-धीरे वार्तालाप करती हुई डालियों को झुका रही है। उसके माथे पर बडी बिन्दी चमक रही है और पैरों में झुन-झुन आवाज देते हुए छोटे-छोटे पाजेब थे। अरे, उतनी सुन्दर आँखों को तो मैंने आजतक कहीं नहीं देखा है। जब तक मेरे बाबा ने मुझे बुलाया नहीं, तब तक मै अपनी चेतनावस्था में लौटा ही नहीं''।

यह सुनने के बाद एक दो बार मै भी गदाय के साथ बाबा के पीछे गया। लेकिन हाय! ऐसे अद्भुत दृश्य

देखना मेरे भाग्य में कहाँ? लेकिन मैंने अपने आपको समाधान कर लिया कि जब गदाय मुझे अपनी आँखों देखी बात का यथावत् वर्णन कर रहा है तो मुझे भी उस दृश्य को देखने की अनुभूती मिल ही जाती है। बस, अपनी जिज्ञासा को इस प्रकार शान्त कर तब से मैंने गदाय की आँखों से इस संसार को देखना आरंभ कर दिया। अगर आप भी इसी मार्ग का अनुसरण करेंगे तो जीवन में आनंद ही आनंद पाएंगे।

जैसे कि हम सब जानते ही है, हर परिवार के एक "पारिवारिक गुरू" होते हैं जो उस परिवार के व्यक्तियों को 'दीक्षा' देते हैं। (वैसे मुझे तो नहीं मालूम लेकिन गदाय ने बताया है कि दीक्षा का अर्थ भगवान से संबधित कुछ मंत्र सिखाना है) इस दीक्षा ग्रहण के बाद हम बच्चे भी बडों के समान पूजा घर में जाकर ठाकुर की पूजा कर सकते हैं।

जानते है आप कि गदाधर के दीक्षा के दिन क्या हुआ था? हम लोगों की टोली सबेरे ही पहुँच गयी क्योंकि एक तो हमारे मित्र की दीक्षा का ग्रहण और दूसरा यह कि हमें पहले से ही मालूम था कि आज हमें मिष्टी और स्वादिष्ट भोजन वहाँ मिलने वाला है। हम बच्चे पूरे उल्लास में थे। मुझे यह उत्सुकता हो रही थी कि मेरा मित्र आज कैसा लगेगा? गदाय को वैसे वाणी की शुद्धता

है ही। जिसका अर्थ है सदा सत्य कहना। इस संसार में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो झूठ तो नहीं बोलेंगे लेकिन सच भी नहीं कहेंगे। गदाय हमेशा सत्य ही कहता है। किसी भी कार्य को आरंभ करता है तो पूरे लगन के साथ उसे पूरा करेगा और उसकी आखिरी सीढी तक पहुँचेगा। इसी को 'दीक्षा' कहते है। इसीलिए एक बात हमें स्मरण रखना चाहिए कि उसके सामने हमें केवल सत्य ही कहना चाहिए क्योंकि आप जिस बात को उससे कह रहे है उस पर वह संपूर्ण विश्वास करेगा ही।

विश्वास करने के बारे में गदाय ने एक सुन्दर कहानी बतायी। अरे, गदाय को कितनी अच्छी-अच्छी कहानियाँ आती हैं? उसकी कहानियों में हमें साधु-सन्त, अच्छे-बुरे, पशु-पक्षी...वाह! कैसे-कैसे लोग मिलते हैं?

गदाय ने कहानी बतायी कि एक गाँव में एक गरीब स्त्री थी, जिसे दस साल का एक बेटा था। आस-पास के गाँव वालों को दूध बेचकर वह अपना जीवन चलाती थी। बेटे के बचपन में ही पिता चल बसे। जंगल के उस पार रहने वाले गुरूजी को भी वह दूध देती थी। कुछ समय के बाद उसने यह दूध बेचने का काम अपने नन्हें से बेटे को सौपा क्योंकि अब वह बूढी होती जा रही थी।

बेटे ने 'हाँ' कह दी। लेकिन उसके लिए जंगल पार

करने में डर लगता था। उसने अपनी माँ से यही बताया कि मुझे अकेले जंगल पार करने में डर लगता है। माँ ने उसे समझाया- ''अरे पगले! डर की क्या बात? उस जंगल में रहने वाले तेरे गोपाल भैया का नाम ले। फिर तुम्हें डर-वर नहीं लगेगा। जंगल में जाते ही भैया को आवाज दोगे तो वह स्वयं आकर तुम्हें गुरूजी के आश्रम में ले जाएगा और वापस भी छोड देगा''।

अपने माँ के वचनों पर बेटे ने संपूर्ण विश्वास किया और ''हाँ'' कह दी। गुरूजी के आश्रम में दूध देने निकल पडा। माँ से तो उसने 'हाँ' कह दी लेकिन जंगल के निकट जाते ही वह डरने लगा। घना जंगल और चारों ओर से जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें। उसके हृदय की गति बढ़ गई, हाथ-पैर काँपने लगे और बालक पसीना-पसीना हो रहा था। उसने निश्चय कर लिया कि जंगल पार करना मेरे बस की बात नहीं और मै वापस लौट जाऊँगा। अचानक उसे अपने माँ के शब्द याद आए और उसने रूँआसे स्वर में चिल्लाया- ''गोपाल भैया! तुम कहाँ हो? मुझे बहुत डर लग रहा है। तुम्हारे बिना मै एक कदम भी आगे नहीं बढ सकता''।

अब देखिए कैसा चमत्कार हुआ! दूर से उत्तर मिला-''भैया! मै आ रहा हूँ। मेरे रहते तुम्हें कैसा डर''? जब उस बच्चे ने देखा तो सामने मोरपंख पहने, मुरली हाथ

में लिए-बिलकुल वही मूर्ति जिसे हम अपने दीवारों पर चित्रों में देखते हैं! भगवान कृष्ण बालक के रूप में आकर बच्चे का हाथ अपने हाथ में लिए गुरूजी के आश्रम तक छोडा। दूर से ही आश्रम को दिखाकर कृष्ण ने कहा- "देख! वही तुम्हारे गुरूजी का आश्रम है! उन्हें दूध देकर तुरन्त वापस आ जाना। तुम्हे वापस जंगल से बाहर भी छोड दूँगा"। लडका भी कुछ बुद्धू नहीं था। बोला, "भैया! तुम भी मेरे साथ गुरूजी के पास चलो"। लेकिन गोपाल ने यह कहकर साफ मना कर दिया कि "जैसे तू जंगल से डरता है, वैसे ही मैं इन गुरूओं से डरता हूँ। फिर कभी देखा जाएगा"।

ऐसे ही दिन बीतते गए। मालूम नहीं, एक दिन कैसे गुरूजी उस बालक से पूछ बैठे, "अरे! इतने दिनों से मैंने ध्यान ही नहीं दिया कि दूध देने तू कब से आ रहा है"? "साहबजी,! आपतो आँखों बंद करके पूजा करते है इसलिए आपको नहीं पता। मै ही बहुत दिनों से आपको दूध ला रहा हूँ क्योंकि मेरी माँ बूढी हो गयी है"। गुरूजी ने पूछा "लेकिन तू इतना छोटा है और प्रतिदिन तू इतने घने जंगल के रास्ते से कैसे आ रहा है? तुझे डर नहीं लगता"? "साहबजी! मुझे डरने की क्या बात है? जंगल में मेरा गोपाल भैया जो रहता है"?

यह सुनकर गुरूजी की हैरानी की सीमा नहीं रही।

क्योंकि उन्हे मालूम है कि उस घने जंगल में खूंखार जानवरों के सिवाय मनुष्य नामक जीव कोई नहीं रहता। इसीलिए उन्होंने प्रश्न किया- "कौन है तुम्हारा भाई"? "वही मेरा गोपाल भैया! वैसे मैने पहले ही सोचा था कि उसे आपके पास ले आऊँगा। लेकिन उसने माना ही नहीं"। "ठीक है, तुम्हारा भाई नहीं आता है तो मुझे ही उसके पास ले जाना"। "अच्छी बात है चलिए गुरूजी"! गुरूजी को अपने साथ जंगल में ले जाकर उसने अपने गोपाल भैया को आवाज दी। लेकिन भैया नहीं आया, केवल उत्तर ही मिला कि- "मेरे भाई, तू बुरा मत मानना लेकिन मैं तुम्हारे गुरू जैसे पढे-लिखे लोगों से डरता हूँ। तुम्हारी और मेरी दोस्ती हो सकती है क्योंकि तू तो भोला-भाला है। तुम्हारे गुरूजी से क्षमा माँगना। फिर कभी देखा जाएगा। अच्छा तू चल! रात होने वाली है और माँ घबराती होगी"।

यह सुनते ही बालक तीर की भांति जंगल की ओर दौड़ पडा और चकित गुरूजी वहीं खडे रहे।

हमारा गदाय भी ठीक उसी बालक के समान है, जो दूसरों के शब्दों पर पूरा का पूरा विश्वास रखता है। अब दीक्षा के समय गुरूजी ने, जिनका नाम केनाराम था गदाय के कान में धीरे-धीरे मंत्र का उच्चारण किया। दूसरे ही क्षण गदाय 'ओम' का उच्चारण करते हुए अपना सुध खो बैठा। उसके चेहरे पर भी एक अद्‌भुत चमक! बहुत देर

के बाद गदाय हमारी दुनिया में वापस लौट आया। हमें मालूम था कि जिस देवता का मंत्र उसने उच्चारित किया था, उस देवता के दर्शन गदाय ने कर लिया है। अत: इतनी बडी चीख पूरी भीड में रहने के बाद भी ऐसे लगता था, मानो गदाय अकेले में कुछ ढूँढ रहा हो! वैसे हम सब के साथ वह हँसता-खेलता है, फिर भी ऐसे लगता है कि मानो वह कुछ गहरी सोच में हो।

अभी तो हम सब अपने आपको बालक ही मानते है, जिन्हें गंभीर बातें समझ में नहीं आती। लेकिन दूसरी ओर गदाय अनुभव करने लगा कि मैंने क्यों जन्म लिया है और मुझे करना क्या है?

दो-तीन घटनाओं के आधार पर मै आपको इसके बारे में स्पस्ट करूँगा। एक बार मै गदाय के साथ बडी देर तक तालाब के किनारे मौन ही बैठा रहा। अचानक छोटे-छोटे कंकड फेंकने वाले मेरे हाथ को पकडकर गदाय ने कहा- ''अरे शिवराम! तुम से एक बात पूछनी है''। जैसे कि मै बहुत कुछ जानता हूँ, मैंने कहा- ''पूछ, क्या पूछना है? फिर भी ऐसी कौनसी बात है जो तू नहीं जानता और मै जानता हूँ''? जानते है आप कि गदाय का प्रश्न क्या था? यही कि, ''ये बुजुर्ग लोग भगवान की पूजा करते समय आरती उतारते है, और प्रसाद चढाते हैं। लेकिन मुझे यह जानना है कि क्या वहाँ कोई देवी या देवता रहते

है जो इन्हे ग्रहण करते है''? सुना आपने? अरे वाह! जैसे कि मैं बहुत बडा पंडित हूँ। गदाय ने मुझसे इतना अच्छा प्रश्न किया। मेरे मित्र का यही गुण मुझे पसंद है कि वह अपने आपको किसी से भी ज्यादा बुद्धिमान नहीं समझता। प्रायः उसके अन्दर यही भावना रहती है कि मालूम नहीं कब किससे क्या सीखने को मिले। मुझे याद है कि हमारे दादाजी ने बताया था कि एक 'अवधूत' रहता था जो पशु-पक्षियों से लेकर मनुष्यों तक हर किसी से कुछ न कुछ सीखता था। हमारा गदाय भी वैसा ही अवधूत है जो अनुभव करता है कि जीवन भर हमें कुछ न कुछ सीखते ही रहना है। लेकिन इस प्रश्न का उत्तर मुझ जैसे सामान्य बालक के पास कहाँ?

लेकिन गदाय किसी भी विषय को ऐसे-वैसे छोडने वाला नहीं था। विषय को आगे बढाते हुए उसने कहा- ''सुन शिवराम, मेरा हाथ तुमसे लगे तो तू उस स्पर्श का अनुभव कर सकता है कि नहीं? या मै जलेबी खिलाऊँगा तो उसकी मिठास तुम्हे मालूम होगी कि नहीं? (हमारे गदाय को जलेबी बहुत पसंद है।)

ये देवी-देवता भी ऐसे ही इन सारी बातों का अनुभव कर सकते हैं? या उनके नाम पर हम अपने मन पसंद चीजों को खा रहे हैं? प्रश्न करते-करते गदाय एकदम से हँसने लगा और मैं भी! बडी देर तक दोनों इतना हँसते

रहे कि हमारी आँखों से आँसू बहने लगे। गदाय की यही विशेषता है कि एक पल में जितना गंभीर रहता है, दूसरे ही पल में उतना हँसा देता है।

''अरे शिवराम! तू जानता है कि मै क्यों हँस रहा हूँ? मुझे एक कहानी याद आ रही है''। ''अरे बोलना गदाय! वह कौन सी कहानी है''? हमेशा की तरह मै बडी बेचैनी से पूछा।

''एक गाँव में 'माता' का एक भक्त रहता था। धनी होने के कारण वह ठाट-बाट से रहता था। 'माता' की पूजा के लिए उसने अलग से एक कमरा ही बनवा दिया। रेशम की धोती, माथे पर बहुत बडा तिलक, गले में सोने का हार और चाँदी के गडे गए रुद्राक्ष देखनेवालों को लगता था कि अरे, यह कितना बडा भक्त है। पूजा-पाठ से चारों ओर का वातावरण गूँज उठता था। जानते हो तुम कि, वह कैसे-कैसे प्रसाद चढाता था? काली माता की पसंदगी के नाम पर भेड-बकरों की बलि दी जाती थी और उस मांस को खूब चाव से खाया जाता था। अगर किसी ने इस 'बलि' पर आपत्ति उठायी तो उन्हें 'ऐसा कहना अपराध है'। कहकर चुप करा दिया जाता था। धनी होने के कारण उस पर लोग उंगली नहीं उठा सकते थे।

ऐसे ही कई वर्ष बीतते गए। यह भक्त भी बूढा हो गया। एक बार उनका एक मित्र उन्हें देखने आया। पूजा तो वही पहले की ही भांति बडी धूम-धाम से हुई लेकिन अब प्रसाद के नाम पर केवल नारियल के लड्डू और जलेबियाँ ही बाँटी जा रही थीं। दोस्त को इसे देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि अब बलि नहीं चढाई जा रही है। जानते हो शिवराम इसका समाधान उस भक्त महाशय ने क्या दिया था? 'क्या करूँ? अब तो मै बूढा होता जा रहा हूँ। बाल और दाँत दोनों अपनी-अपनी जगह से हिल रहे हैं। पहले जैसे मुझसे माँस नहीं खाया जा रहा है। नारियल के लड्डू और जलेबियों को धीरे-धीरे मुँह में रखकर चूस लेता हूँ।'' सुना! यह है उस माँसाहारी भक्त का शाकाहारी बनने के पीछे का रहस्य।

मै इस कहानी को सुनकर खूब हँसता ही रहा। वाह रे भक्त! और उनकी भक्ति! मुझे इस बात की भी याद आयी कि हममें से कई लोग उपवास रखने के नाम पर उस दिन रोज से अधिक दूध पीते है और फल, मिठाई और मेवा जैसी दुनिया भर की चीजें खाते ही रहते हैं। फिर भी आहें भरते है और अपने चारों ओर के लोगों से कहते फिरते है कि, ''अरे! आज तो हमने उपवास रखा है''। मेरे सोचने की श्रृंखला गदाय के इस प्रश्न से टूट

गयी ''अब बता मेरे दोस्त, कि भगवान क्या इन सारे प्रसादों को खाते है या उनके नाम पर उनके भक्त निगल जाते है''?

मैने साफ-साफ अपने अज्ञान को गदाय के सामने रख दिया - ''मुझे ऐसी बातें क्या मालूम? केवल एकटक तेरी ओर देखना ही मुझे पसंद है। तुम मेरी आँखों के सामने हो, तो बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए''। ओ हो! शिवराम मुझे तो तुम हमेशा चने की झाड पर चढाते हो। लेकिन कुछ उत्तर नहीं दे रहे हो''! कहने वाले गदाय की आँखों में मेरे प्रति वात्सल्य झलक रहा था। बस, इसी क्षण के लिए मै जीवित रहता हूँ।

लेकिन कहानी यहाँ समाप्त नहीं हुई। एक दिन शाम में हम दोनों मित्र कालीमाता के मंदिर में गए। वहाँ कोई अभी आने-जाने वाले नहीं थे इसलिए पुजारी ने गदाय को मंदिर का भार सौपा। जानते है आप कि गदाय क्या कर रहा था? माता की प्रतिमा के नाक के पास अपनी दोनों उंगलियाँ रखकर, उत्सुकता भरे स्वर में मुझसे बोला - 'शिवराम! देख। माँ साँस ले रही है। मुझे इसका अनुभव हो रहा है। गदाय के स्वर में ही नहीं आँखों में भी किसी महान् रहस्य के खुल जाने की उत्सुकता।

इसे सुनकर मुझे मालूम है कि आप यही सोच रहे

होंगे कि गदाय के साथ-साथ मैं भी पागल हो गया हूँ। सोचिए सोचिए। मैं क्या करूँ?

गदाय का एक और प्रश्न यह था कि, ''कहते हैं कि चैतन्य महाप्रभु, मीरा, कबीर, सूर आदि भक्तों को भगवान के दर्शन हुए हैं। क्या यह बात सच है''? भला, इसका उत्तर मैं क्या जानूँ? अगर मैं यह कहूँ कि हमारे लिए तुम ही चैतन्य हो, मीरा हो और सूर भी हो तो गदाय क्या इसे मानेगा?

....

मैंने पहले ही आप से बताया था कि गदाय कितने मधुर स्वर में गाता था और हम सब उस पर लट्टू होते थे। हमारे गाँव वाले हमेशा उससे गवाते ही नहीं बल्कि कुछ पुराण या कथाएँ पढवाते भी थे। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि गदाय कितना अच्छा पढकर सुनाता था। जितनी देर वह पढता था, उतनी देर तक हमारे मन उसकी वाणी की जाल में मछलियों की भांति फँसे रहते थे। हम अपने आपको उस जाल से छुडाने में असमर्थ थे। चाहता तो गदाय ही हमें छोड सकता था, लेकिन वह छोडेगा नहीं।

एक बार गदाय रामायण का एक अंश पढकर हमें सुना रहा था। हम सब लोग खाना खाकर उसे घेरकर बैठे और कहानी सुनने लगे। वैसे वहाँ उपस्थित हम दस-बीस

लोगों को छोडकर बाकी का पूरा गाँव सो रहा था। हमारी टोली के कुछ दस बन्दर और बाकी बुजुर्ग थे। विषय था हनुमानजी का समुद्र लाँघना और सीताजी से अशोक वाटिका में मिलना।

मैंने पहले ही आपसे बताया था कि गदाय सीता माई को कितना चाहता था। (एक बार गदाय ने मुझसे, स्वयं कहा था कि सीता मैया ने अपनी मुस्कुराहट मुझे दे दी होगी। कारण यही रहा होगा कि उसकी मुस्कान में एक ओर इतना प्रेम और आदर था तो दूसरी ओर इस प्रेम और आदर का ग्रहण न कर सकने वाली मानव जाति के प्रति दुःख भी था।) कहानी पढते-पढते ऐसे लगा कि मानो गदाय स्वयं सीता मैया बन गया। शिवजी ने जिस प्रकार से विषको अपने कण्ठ में छिपा लिया था, वैसे ही गदाय ने भी संसार की सारी वेदना को अपने स्वर में छिपा लिया था।

क्या बताऊँ मै कि उस दिन हमारे गदाय ने हनुमानजी के बारे में कैसा सुन्दर वर्णन किया था। ऐसे लग रहा था कि मानों रामदूत स्वयं वहाँ आकर रामनाम जपने लगा। मै सोच रहा था कि हमारा मित्र कितने सहज रूप में वर्णन कर रहा है। यह सोचते-सोचते कि अरे यह तो पूरा उसके स्वर का जादू ही है, मैंने अपने बगल में झाँका तो हुक्का-बक्का रह गया। क्योंकि साक्षात्

हनुमानजी वहाँ बैठकर रामनाम बडी भक्ति और तन्मयता से जाप रहे थे। उनकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। मुझे लगा कि हनुमानजी सुन्दर और बलशाली ही नहीं, विनम्र के भी साक्षात् मूर्ति थे। यह देखते ही मेरे रोंगटें खडे हो गए। लगा कि मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं। इसीलिए आँखें मलकर दुबारा फिर से देखा। संदेह नहीं, ये तो हनुमानही हैं। उनकी आँखों में भक्ति झलक रही थी। इसीलिए मुझे लगा कि मैंने ऐसे नेत्रों को कहीं और नहीं देखा।

चारों ओर अंधकार। टिमटिमाती हुई दिया के सामने गदाय बैठकर कहानी पढ रहा था। सीता मैया की यह करूण कहानी इतनी बार हमने सुनी है, फिर भी बार-बार सुनने की इच्छा होती है और हरबार सुनकर हम दु:खी होते भी हैं। उस दु:ख में भी कुछ 'अर्थ' दिखता हैं जिसे शायद बडे लोग ''परमार्थ'' कहते हैं। एक ओर अनोखे ढंग से कहानी सुनाने वाला बालक गदाय और दूसरी ओर तल्लीन होकर सुनने वाले अनुपम ब्रह्मचारी भक्त हनुमानजी को देखता ही रह गया। ''चल! अब कथा समाप्त हो गयी''- गदाय के इन शब्दों से मैं वापस इस दुनिया में लौटा। घर लौटते समय मेरे मन में यही भावना थी कि मुझे कोई भ्रम तो नहीं हो गया? रातभर इसी सोच में मैं करवटें बदलता रहा। अचानक मुझे लगा कि शायद आते-आते मै गदाय से ही इसके बारे में पूछ लिया होता!

ठीक है, कल सबेरे ही सही।

जैसे ही सबेरा हुआ, मैं गदाय के पास पूछने दौडा। मेरे कुछ पूछने से पहले ही गदाय का यह प्रश्न कि ''तुम हनुमानजी के बारे में पूछने आये हो न''? मेरी हैरानी और बढ गयी। सही है, मेरे मन की बात को मेरे दोस्त के अलावा और कौर जान सकेगा? गदाय ने मुझे संभालते हुए कहा- ''तुम्हें याद है कि बाबा ने क्या कहा था? क्या मेरे बाबा कभी झूठ बोलेंगे''?

तुरन्त मेरे मन में गदाय के बाबा के कहने के साथ-साथ मेरे दादाजी का कुछ श्लोक- ''यत्र-यत्र रघुनाथ कीर्तन.....'' की भी याद आयी। मै, जो अपनी ही बोली ठीक से नहीं जानता, संस्कृत के श्लोक क्या कह पाऊँगा? हाँ, इसका अर्थ मुझे इतना याद है कि जहाँ-जहाँ राम की कथा सुनाई जाती है, वहाँ-वहाँ हनुमानजी अवश्य कथा सुनने उपस्थित होते हैं। बस, अपने आप मेरे संदेह का निवारण हो गया!

मैने जैसे कि पहले ही बताया है गदाय जिस बात को सुनता है उसे पूरी तल्लीनता से ध्यान करता है। जिस देवी या देवता की उपासना करता है, उनके चिह्न हमें उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखते है। एक बार हनुमानजी की पूजा करते समय वह इतना तल्लीन हो गया था कि उसकी

आँखें चंचल ही नहीं बनी बल्कि पीछे एक पूँछ भी दिखने लगी।

मेरे साथ इतने अपनेपन के व्यवहार के बाद भी मै बहुत बार अपने मित्र को समझ नहीं पाता था। हमारे गाँव से दूर जो श्मशान था, जिससे हम बच्चे बहुत डरते थे। अगर उधर से दूसरे गाँव में जाना अनिवार्य होता तो हम चार-पाँच दोस्त मिलकर जल्दी-जल्दी डरते-डरते हो आ जाते थे।

बहुत बार, मुझसे यह कहकर कि 'कुछ काम है' गदाय चला जाता था। मैंने सोचा कि शायद उसकी माँ ने उसे रूकने के लिए कहा होगा। ऐसे बहुत बार हुआ। एक बार सोचा कि मैं उससे घर पर ही मिलूँगा - उसके घर पहुँचा तो माँ ने मुझसे उल्टा प्रश्न किया कि "अरे शिवराम! तेरे साथ गदाय नहीं आया है"?

इस प्रश्न को सुनकर मै हैरान हो गया और तुरन्त घर से निकल पडा कि चलो उसे मै ढूँढ लाउँगा। रास्ते में मिले विमल और अतुल ने बताया कि गदाय को श्मशान की ओर जाते उन्होंने देखा था। चार कदम मै आगे बढा कि नहीं, स्वयं गदाय मुझे श्मशान से लौटते दिखा। उसके होंठ ऐसे हिल रहे थे कि मानों किसी मंत्र को वह जाप रहा हो। उसकी आँखें लाल-लाल थीं जैसेकि

वह रो रहा था। उसके हाव भाव से ऐसे लग रहा था कि मानों उसने मुझे पहचाना ही नहीं। थोडी देर के बाद इस दुनिया में शायद वापस लौटा होगा, मुझे पहचानते हुए गदाय ने बडी उत्सुकता से बिना मेरे पूछे ही कहना आरंभ कर दिया ''देख शिवराम। मरने के बाद सभी लोगों को उसी श्मशान में ले जाते है। लेकिन मरण के बाद होता क्या है? नृत्य करते हुए श्मशानों में घूमने वाले शिवजी केवल वहीं पर नृत्य करते हैं? फिर माता को देखने से एक हाथ में खड्ग लेकर नाश करती है तो दूसरे हाथ से आशीर्वाद देती है। माता लाल-लाल जीभ लटकाती हुई गले में मुण्डमाला पहनकर पिता शिवजी के पीठ पर ही नृत्य करती हैं। इन सब बातों का अर्थ वास्तव में क्या है? क्या जन्म देने वाली माँ ही हमारा नाश भी करेगी? मुझे इन सारी बातों के बारे में सोचते-सोचते हैरानी हो रही है। यही सब समझने के प्रयत्न में मै श्मशान में जा बैठा''।

''लेकिन गदाय, श्मशान में बैठते हुए क्या तुझे डर नहीं लगता है''? मै तो बहुत डरता हूँ। गदाय का निश्चल उत्तर था – ''डर? कैसा डर? इसमें डरने की क्या बात है? जन्म कहीं भी लें हम, लेकिन अंत में हम सबको वहीं पर पहुँचना है! अंत में जहाँ हमें पहुँचना है, वहाँ पहले ही पहुँचना और मिट्टी होने से पहले उस मिट्टी के मर्म को जानना क्या अधिक उचित नहीं''?

ऐसे गंभीर प्रश्न का उत्तर भला, मै कैसे दे सकता हूँ? अब मेरे अंदर धीरे-धीरे शंका पैदा होने लगी कि क्या गदाय हमसे दूर होता जा रहा है? मन कुछ शून्य सा हो गया था। गदाय के साथ तालाब के किनारे बैठ गया।

धीरे-धीरे दिन ढल रहा था। किसान अपने दिनभर की खेती बाडी के बाद घर वापस लौट रहे थे। हँसते-खेलते बच्चे भी गायों को वापस अपने-अपने घर हाँक रहे थे और बुजुर्ग लोगों की बैठक पास ही जम गई थी। स्त्रियाँ अंधेरा होने से पहले ही घर का काम निपटाने की धुन में थीं। चारों ओर के ऐसे निर्मल और शान्त वातावरण में तालाब के किनारे बैठे मेरे और गदाय के बीच का वार्तालाप कुछ निराला था- "अच्छा गदाय। अब बता, आजकल तेरा रवैया कुछ अजीब सा लग रहा है। मै अनुभव कर रहा हूँ कि तुम धीरे-धीरे हमसे दूर होते जा रहे हो। कम से कम मुझसे कहो कि क्या हो रहा है"? मैने ऐसे पूछा जैसे कि उस पर मेरा कुछ ज्यादा ही अधिकार है। हो सकता है कि उसके प्रति मेरे प्यार ने ही मुझे कुछ अधिकार भी दे दिया हो।

गदाय एक गहरी साँस लेकर बोला - "शिवराम! मै कुछ बता नहीं पा रहा हूँ। वर्षो से अंधेरे बंद कमरे में अगर हम एक माचिस जलाएँगे तो थोडी देर के लिए हमें वहाँ की वस्तुएँ दिखती हैं। लेकिन माचिस के बुझते

ही वापस अंधकार छा जाता है। देख, इस तालाब के ऊपरी तह पर काई छाई है। हाथ-पैर धोने के लिए उसे हम हाथ से इधर-उधर कर देते है तो पानी स्वच्छ दिखता है। लेकिन थोडी देर के बाद काई से पानी फिर भर जाता है। मेरी मानसिक स्थिति भी ठीक ऐसी ही है। लग रहा है कि मुझे कुछ शक्ति आगे ले जा रही है।'' मालूम नही, गदाय को मेरे चेहरे पर क्या भाव दिखे, झट से बोल पडा- ''छोड अब इन बातों को। तू तो बहुत भोला-भाला है। एक बात तू जानता है न''? मुझे इसे सुनते ही खुशी हुई कि चलो, मैं भी कुछ जानता हूँ। इसीलिए पूछा ''कौन सी बात''?

''मेरे बाबा ने मेरे जन्म के बारे में जो बात बताई है, उसके बारे में। तुम तो जानते ही हो कि तीर्थ यात्रा करना उन्हे बहुत पसंद था। सुदूर रामेश्वरम तक की यात्रा उन्होंने कर डाली। एक बार ऐसे ही वे 'गया' गए और बडी श्रद्धा से अपने पितरों की पूजा की। शिवराम! तू तो जानता ही है न, कि ऐसे करने से हमारे पितरों को सद्गति प्राप्त होती है। इन सब के बाद बाबा वहाँ के देवता भगवान विष्णु के दर्शन किए और जाकर धर्मशाला में सो गए। उन्हें हल्की सी नींद आ गई और एक अनोखा स्वप्न भी आया। वैकुण्ठ, (जहाँ भगवान विष्णु रहते है) में भगवान विष्णु अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे। शंख और चक्र धारण किए वे बहुत ही चमक रहे थे। मेरे बाबा विष्णु

भगवान को अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से एकटक देख रहे थे। उन्हें स्वयं अपने भाग्य के प्रति आश्चर्य हो रहा था। दूसरी ओर उन्हें डर भी लग रहा था कि वहाँ के परिजन कहीं मुझ जैसे गरीब ब्राह्मण को धक्का देकर बाहर कर देंगे।

इतने में भगवान विष्णु ने स्वयं बाबा को अपनी ओर बुलाया। लेकिन बाबा सोच रहे थे कि भगवान किसी और को बुला रहे हैं, इसलिए पीछे-पीछे सटकने लगे। लेकिन भगवान ने अब की बार स्पष्ट शब्दों में कहा- ''खुदीराम! मैं तुमको ही बुला रहा हूँ, तुम कमरपकूर के ही रहने वाले हो न''? बाबा डरते-डरते बडी श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान के पास गए। मन की धडकन को थामकर नत मस्तक होकर भगवान का स्तोत्र पाठ करने लगे। अंत में भगवान ने कहा- ''सुनो खुदीराम! मुझे धर्म की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेना होगा। मुझे लगा कि तुम और चन्द्रमणि मेरे लिए योग्य माता-पिता हो। तुम सही-धर्म में अपने कर्तव्यों का पालन करते हो, इसलिए मैंने तुम्हारे ही घर जन्म लेने के लिए चुना है।

भगवान के ये शब्द सुनते ही मेरे बाबा को कंपकंपी होने लगी। हाथ जोडकर बडे विनम्र शब्दों में उन्होंने कहा- ''हे प्रभू! आप अपने अवतार लेने के लिए हमारा घर चुनना

हमारा परम सौभाग्य है और हमारे पूर्वजों का तप: फल है। मुझे तो शंका हो रही है कि क्या हम इतने बडे पुण्य को प्राप्त करने के योग्य हैं? आप तो साक्षात् लक्ष्मी के पति है और हम ठहरे गरीब से गरीब। हमारे खेत में दो चार दाने उगते है तो नमक से दो रोटी खाकर अपना पेट भरते हैं। इन सारी बातों को हे जगत् के पिता! आप अच्छी तरह से जानते हैं। यदि हम आपका उचित रूप से देखभाल नहीं करेंगे तो यह महान् अपराध होगा। अत: आप स्वयं मेरी इस दुविधा को समझने का प्रयत्न कीजिए''।

इन बातों को सुनते ही भगवान हँस पडे। ''अरे! मैं तो तुम्हारा बच्चा हूँ। पिता जो देता है, बच्चा उसे ही खा लेता है। वैसे माँ कभी भी अपने बच्चे को भूखा नहीं सुलाती है। ठीक है, तुम चिन्ता मत करो। वैकुण्ठ छोडते समय इन सारी बातों का ध्यान रखूँगा''।

यह सुनते ही मेरे बाबा के आनंद की सीमा नहीं। अत: भगवान के चरण छूकर उन्होंने विनम्र भाव से कहा- ''भगवान अब सब कुछ आपकी इच्छा''। इसके बाद सपना टूट गया। नींद खुलने के बाद भी बाबा को लगा रहा था कि यह सपना नहीं सच है और घर में कुछ चमत्कार अवश्य होने वाला है। यात्रा पूरी कर बाबा कमलपकूर लौट आए। आते ही मेरी माँ को उन्होंने कुछ विलक्षण सा पाया। मेरी माँ सपने में भी झूठ नहीं बोलती

है और सदाचार का पालन करती है। उनके मन में कपट और द्वेष नाममात्र के लिए भी नहीं होते। बाबा को अपनी यात्रा पूरी कर आने के बाद लगा कि मेरी माँ के ये सारे अच्छे गुण अब और भी उभर गए हैं।

माँ ने बाबा को बताया कि उनकी अनुपस्थिति में माँ को कुछ विचित्र अनुभूतियाँ होने लगीं।

एक दिन सदा की ही भांति वे शिवजी के मंदिर में पूजा करने गई। पूजा के आरंभ होने से पहले ही माँ को लगा कि एक अनोखा प्रकाश मूर्ति में से आकर उनमें प्रवेश कर लिया। मेरी माँ अचेत होकर गिर पडी। चेतनावस्था में आने के बाद उन्हें अनुभव हुआ कि एक अद्भुत शक्ति ने उनके अंदर प्रवेश कर लिया है और वे माँ बनने वाली है। उनका एक और अनुभव यह रहा कि उनके पलंग पर कोई लंबा सा व्यक्ति सोया हुआ है। लेकिन पास जाकर देखने पर पलंग सूना। ये सारी बातें माँने बाबा को सुनाई तो बाबा ने अपना सपना दुहराया। अब दोनों माँ और बाबा ने यह निश्चय कर लिया कि हमारे घर में कुछ चमत्कार होने वाला है और कोई अद्भुत व्यक्ति जन्म लेने वाला है''।

यह पूरा ब्योरा देकर गदाय, जैसे कि कुछ सोच में पड गया हो, शून्य में देखता रह गया। झीगुरों की आवाज

और तालाब में छोटे-छोटे लहरों के उठने की ध्वनी और दूर बहुत उँचे प्रदेश में टिमटिमाते तारों के अलावा चारों ओर कुछ नहीं दिख रहा था। चारों ओर अंधकार छा गया था।

अचानक मुझे लगा कि इस घटना को सुनाते समय गदाय के बोलने का ढंग और विषय दोनों ही कुछ अनोखे थे। ऐसे बोलने वाले गदाय को मैं जानता ही नहीं। मुझे कुछ डर सा लगा। क्या हमारा यह मित्र हमसे दूर कहीं ऊँची उडान उडकर चला जाएगा? मुझे कुछ घबराहट होने लगी और चक्कर सा आने लगा। लगता है कि गदाय ने मेरी स्थिति को जान लिया। इसीलिए मेरा हाथ पकडकर उठाते हुए बोला- ''चल अब घर लौटेंगे''। घर पहँचने तक उसने मेरा हाथ नहीं छोडा। मेरे हाथ को पकडने में ढाढस और स्नेह दोनों साथ थे।

....

इसके बाद एक प्रकार से गदाय ने स्कूल आना ही छोड दिया। मेरे मित्र के बिना मुझे भी स्कूल से क्या वास्ता? हमने भी छुट्टी कर दी। लेकिन एक और झंझट आ खडा हुआ। झंझट के बारे में सुनाने से पहले मै गदाय के भाई रामकुमार के बारे में आपको बताऊँगा। उनके प्रति हमें बडी श्रद्धा तो थी ही, हम उनसे डरते भी थे। रामकुमार भैया बहुत बडे पंडित थे। वे ज्योतिषी थे अत:

गाँववाले उन्हें बहुत मानते थे। ऊँचे स्वर में मंत्रोच्चारण करते हुए वे पूजा पाठ भी करवाते थे। हम बच्चे कुछ समझ तो नहीं सकते थे किन्तु उनके स्वर का माधुर्य हमें बहुत अच्छा लगता था।

स्वयं इतने बडे पंडित होने के कारण उन्हें यही इच्छा थी कि मेरा छोटा भाई भी मुझ जैसा पढ लिखकर विद्वान बने। लेकिन हमारे मित्र के लिए विद्या का कुछ अलग ही अर्थ था। मोटी-मोटी पोथियाँ पढकर पंडित बनने की बात वह सोच भी नहीं सकता था। मैंने पहले ही आपसे बता दिया विद्या का अर्थ उसके लिए ऐसे प्रश्नों का अर्थ जानना था कि- 'माँ है या नहीं'? अगर है तो उसे हम क्यों नहीं देख सक रहे हैं? अन्य भक्तों को जब माँ के दर्शन हुए थे, तो हम माँ को क्यों नहीं देख पा रहे हैं? ऐसे प्रश्नों का उत्तर ढूँढना ही गदाय की दृष्टि में सही विद्या है, बाकी सब शून्य ही है।

....

मुझे मेरा मित्र बहुत प्यारा होने के कारण मैं उसकी हर बात में 'हाँ मे हाँ' मिलाता हूँ। मुझे स्वयं नहीं मालूम की गदाय में ऐसा क्या आकर्षण है कि अगर वह मुझे कुँएँ में कूदने के लिए कहे तो बराबर मैं कूद जाऊँगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि गदाय कभी झूठ नहीं

बोलेगा और गलत काम नहीं करेगा। उसकी ''कथनी और करनी'' में कोई अंतर नहीं रहता।

रामकुमार भैया भी अपने भाई गदाय को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं। लेकिन जब उन्हें पता चला कि गदाय स्कूल नहीं जा रहा है तो वे बडे क्रोध में आ गए। एक दिन वे गदाय से इसके बारे में पूछ बैठे और गदाय सपने में भी झूठ नहीं बोलता। इतना ही नहीं, अपने भाई के प्रति डर नहीं बल्कि उसे बडी श्रद्धा थी। इसीलिए निस्संकोच उसने अपने भाई के प्रश्न का उत्तर ''हाँ भैया'' कहकर दिया। इसे सुन वे एकदम से चौक पडे। क्रोध आने पर भी प्यार से समझाने का प्रयत्न किया- ''देखो गदाय! पिताजी बूढे होते जा रहे हैं। तुम हमारे घर की आर्थिक स्थिति को भले प्रकार से जानते हो! पुरोहित बनने के लिए भी थोडा बहुत तो सीखना है। इसलिए अब स्कूल जाकर पढाई करले। तू ही सोचले कि अगर हम पढेंगे नहीं तो पेट भरने के लिए हम कमा कैसे पाएँगे''?

गदाय ने अपने भाई की सारी बात को बडी श्रद्धा से सुनी। हमें ''लगा चलो मान गया''। लेकिन गदाय ने स्पष्ट कह दिया ''पूजा पाठ के नाम पर दाल चावल बटोरने वाले ब्राह्मणों को सिखाने वाली विद्या मुझे नहीं चाहिए''। भैया ने सोचा अभी तो बच्चा है, दो चार दिनों

में समझ जाएगा। पर गदाय ने तो केवल खेलने या घूमने-घामने के लिए पढाई नहीं छोडी इस बात से हम सब परिचित थे। विशेषकर मुझे ये सारी बातें कुछ विचित्र लग नहीं रही थीं लेकिन मुझे यह अवश्य अनुभव हो रहा था कि गदाय हमसे दूर-दूर खिंचा जा रहा था। उसकी 'अधखुली' आँखें किसी रहस्य को ढूँढने में तत्पर थी। वह रहस्य क्या था अभी शायद गदाय को स्वयं पता नहीं था।

मेरे लिए सबेरे उठने से लेकर रात में सोने तक मेरे मित्र को छोडकर कहीं और जानेका प्रश्न ही नहीं उठता था। तालाब के किनारे, राजा के बगीचे में, डरते-डरते ही सही श्मशान में, जयरामबाटी जाने वाले मार्ग पर, खेतों में, पुल पर, बैठकर धीरे-धीरे बहने वाले पानी को और तैरते-तैरते अचानक हवा में पलटी मारने वाली मछलियों को देखते हुए हम मौन रूप से ही घण्टों भर बिता देते थे। वार्तालाप करने से अधिक सन्तोष हमें इसी मौन में मिलता था।

कभी-कभी ऐसे ही बडी देर तक बैठे रहने के पश्चात् मालूम नहीं क्यों गदाय एक लंबी आह भरता था। मुझे उसकी आह में वेदना दिखती थी। पता नहीं उसके मन में क्या इच्छा थी! लेकिन पूछने की मुझे हिम्मत नहीं होती थी। पर उसके चेहरे को देख मुझे दु:ख होता था

कि किनके लिए वह इतनी वेदना को सह रहा है? बहुत साहस के साथ एक बार मैने पूछ लिया था, जिसके उत्तर में उसने बताया ''मुझे स्वयं मेरी स्थिति का पता नहीं। मुझे लगता है कि मैने कुछ खोया है, जिसे तुरन्त से तुरन्त पाने की प्रबल इच्छा मुझमें होती है''।

एक बार हमेशा की ही भांति हम तालाब में तैरने के लिए कूद पडे। ऊपर उठने ही वाला था कि गदाय ने मुझे पानी में दबोच दिया। अरे बापरे? यह क्या? मैं तो साँस नहीं ले पा रहा हूँ। अपने आप को बचाने के लिए मैं हाथ-पैर मार रहा था लेकिन गदाय से मै अपने आपको छुडा नहीं पा रहा था। अंत में अपनी पूरी शक्ति लगाकर मैंने गदाय के हाथ से अपने आप को छुडा लिया और पानी से बाहर आकर सही में राहत की साँस ली। ओह! पूरी साँस लेकर चारों ओर देखा तो गदाय को मुस्कुराते हुए सीढियों पर खडा पाया। ''अरे गदाय! यह क्या परिहास तुमने किया? थोडी देर और मैं ऐसे ही रह जाता तो मेरे प्राण उड जाते थे''। ये शब्द मैं कुछ उँची आवाज में गुस्से से बोलना चाहा। ओह! लेकिन गुस्सा? और गदाय पर? संभव नहीं। मुझे गदाय मार भी दे, लेकिन क्या मै उस पर गुस्सा कर सकता हूँ? क्या इसमें भी कुछ अर्थ है? इतने में गदाय ने पूछा ''अरे शिवराम! पानी में जब मैंने तुम्हें दबोचा था, तब तुम्हें कैसे लग रहा था? बोल''। झट से मैंने कहा- ''क्या बोलूँ? मुझे तो यही लग

रहा था कि मैं अब मरा, तब मरा। इसीलिए तेरे हाथ को ऐसे धक्का देकर मैं ऊपर आ गया''।

''सच है! तुम्हें अपने प्राणों की रक्षा करने की जितनी प्रबल इच्छा थी, इतनी ही तीव्र इच्छा मुझे भी होती हैं- ''माता'' को देखने के लिए। हर पल-हर घडी मुझे केलव माता को देखने की इच्छा मात्र होती है। अब तुम्हें मेरी स्थिति समझ में आयी होगी'।

वैसे मैंने सिर तो हिला दिया लेकिन पूरीबात मेरी समझ में कहाँ आई? चलिए अब एक दूसरी बात बताता हूँ। गदाय के घर में दो कमरे थे और एक जगह पर धान जमाकर रखते थे। वहाँ दो औरतें धान कूटती थीं। उनमें से एक का काम ऊखल में धान डालना था तो दूसरी स्त्री उसे कूटने का काम करती थी। इसे बडी सावधानी से करना पडता था। थोडी सी भी सुस्ती हो तो धान डालने वाली स्त्री का हाथ बिलकुल कूटा जाएगा। लेकिन वह स्त्री धान बडी सावधानी से डालने के साथ-साथ अपने बच्चे को दूध भी पिलाती थी और इधर-उधर के सदस्यों से बातचीत भी करती थी। इन सबके बीच भी उसका ध्यान बराबर धान डालने में जुटा रहता था। यह हम सबके लिए कोई नया दृश्य नहीं है क्योंकि हम इसे देखने के आदी पड गए हैं।

लेकिन इसके लिए हमारे गदाय की व्याख्या क्या है, बताऊँ? "देखा शिवराम तुमने? वह महिला अपना काम कितनी सतर्कता से कर रही है? देख, मेरा मन भी बिलकुल वैसा ही है। भले ही कोई भी काम करूँ या किसी भी अवस्था में रहूँ, मुझे एक ही चिन्ता खाई जा रही है कि मैं माँ को किस तरह से तुरन्त देख पाऊँगा। मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं किस रास्ते से जाऊँ.....?"

पर यह सब सुनकर आप इस भ्रम में मत पडिए कि गदाय पहले की भाँति हँसता-खेलता नहीं था। वैसे गदाय को जीवन के प्रति नीरसता कभी नहीं थी। किसी भी सुन्दर दृश्य को देखता है तो तन्मय होकर उसी में लीन हो जाने की उसकी प्रकृति अब कुछ और बढती जा रही थी।

जानते है आप कि एक बार क्या हुआ? हमारी सर्वमंगलादीदी पासवाले गाँव में ही ब्याही गयी थी, अरे, मैं तो बताना ही भूल गया हूँ कि सर्वमंगला है कौन? वह गदाय की छोटी बहन है। हम सब के बीच में पलने के कारण हम सब उसे 'दीदी' कहकर बुलाते ही नहीं वरन् उतना ही प्यार भी करते थे। उसकी बिदाई के समय हम सब सिसक-सिसक कर रोने लगे तो गदाय ने हमें समझाया कि - "अरे, ऐसे रोते क्यों हो? मंगला तो कहीं 'दूर नहीं'

जा रही है। पास के गाँव में ही तो रहेगी। जब जी चाहे, तब जाकर हम उसे देख सकते है''।

रोने की बात कहते ही मुझे याद आया है कि आँसुओं के बारे में गदाय की क्या व्याख्या है। उसका कहना है- ''अगर तुम असत्य कहकर या कुछ गलत काम करके बडों के सामने क्षमा की याचना करते हुए आँखों में आंसू भरोगे तो वे आँसू नाक के पास से बहेंगे और जब प्यार के कारण आँसू बहाते हो (मान लो, मैं तुम सबको छोडकर कलकत्ता चला जाता हूँ) तो वे आँसू आँखों के दूसरे छोर से बाहर टपकेंगे''। मुझे उस समय क्या आज तक गदाय के शब्द समझ में नहीं आए। वैसे सच कहना है तो मुझे तब यह सब सुनकर थोडा सा डर भी लगा। मेरे हदय की गति बढ़ गयी और रोते-सिसकते मैंने गदाय के दोनों हाथों को पकड कर पूछा- ''सच बोल गदाय! क्या तू हम सब को छोडकर सचमुच कहीं चला जाएगा''? मैं उसके हाथ छोडे बिना अकुलता हुआ पूछता ही रहा। ध्यान नहीं दिया कि उस समय मेरे आँसू आँखों के किस छोर से बह रहे थे।

''अरे! यह क्या पागलपन है? मैं तुम सबको छोडकर कहां जा सकता हूँ? अगर मानलो, मैं जाऊँगा तो भी मेरे मन में तुम सब निवास नहीं करते हो? और मुझे यह बता कि तुम सबको छोडकर जाने के लिए मैंने कमलपकूर में

जन्म लिया है''? उसने मुझे उल्टा प्रश्न किया। मेरा लटकाया हुआ चेहरा देखकर शायद मुझे कुछ ढाढस बाँधने के लिए गदाय ने कहा- ''चल! मंगला के घर हो आएँगे''।

हमने इसे माँ को बताया तो माँ ने हमें खाने के लिए पोहे और गुड दिया। वार्तालाप करत-करते, बीच-बीच में कुछ पोहा और गुड चबाते-चबाते हम निकल पडे। मुझे मेरे मित्र का एक गुण सदा विस्मय में डाल देता है। थोडी देर पहले आँसुओं के बारे में बताकर इसीने मुझे रुलाया था। और अब? आराम से हँसते-खेलते हुए आगे बढ रहा है। बातों बातों में हम दीदी के गाँव पहुँच गए। बस, यहाँ मुडते ही दीदी का घर।

सामने हमें गाँव की स्त्रियाँ अपने सिर पर पानी के घडे एक के ऊपर एक रखकर आराम से बातें करती हुई आ रही थी। उन्होंने हाथों से घडों को नहीं पकडा बल्कि हँसी-मजाक करती हुई और हाथ हिलाती हुई आगे बढ रही थी। फिर भी एक बूँद भी बाहर छिडक नहीं रहा था। जैसे कि मैंने पहले ही बताया है गदाय अपने चारों ओर के वातावरण और घटनाओं की बडी बारीकी से अध्ययन करता है। इसीलिए इन स्त्रियों को दिखाते हुए गदाय ने मुझसे कहा- ''देखा शिवराम! ये स्त्रियाँ अपने सिर पर पानी से भरे घडों को कैसे ले जा रही है? कितनी ही

बाते करती हुई चली आ रही है लेकिन न एक घडा हिल रहा है और न एक बूँद पानी टपक रहा है। उनमें कितनी एकाग्रता है। माँ को देखने के लिए भी उतनी ही एकाग्रता चाहिए''।

बात थोडी सी समझ में आयी! यह 'एकाग्रता' क्या होती है? मै पूछ बैठा। लेकिन प्रश्न का उत्तर 'कथनी' में नहीं बल्कि 'करनी' में समझाना मेरे मित्र को अधिक पसंद है। ''चल.....चल मेरे साथ'' कहकर गदाय ने मेरी बाँह पकडली और हम दीदी के घर पहुँच गए। देहली लाँघकर कदम रखते ही, जानते हैं कि आप हमने कैसा अद्‌भुत दृश्य देखा?

सर्वमंगला का पति पलंग पर बैठा था। दीदी उसके पैर दबाती हुई पति की थकान को मिटाने का प्रयत्न कर रही थी। उसकी आँखों में पति के प्रति झलकने वाले प्यार और तन्मयता की भावनाओं को मैने स्वयं अपनी आँखों से देख लिया है, लेकिन आपकी आँखों के सामने चित्रित करने के लिए मेरे पास बिलकुल शब्द नहीं हैं। गदाय ऐसे प्यार भरे दृश्यों को देख तुरन्त विचलित हो जाता है। वह भी उस दृश्य का पूरा-पूरा आनंद ले रहा था। ''देखा शिवराम! ये दोनों आपस में एक दूसरे से कितना प्यार करते हैं''? उसके शब्दों में सन्तोष स्पष्ट झलक रहा था। और उसके मुझे बताया- --उनके हम यहाँ इतने पास आ

गए है फिर भी उनको कुछ नहीं मालूम! इसे ही 'एकाग्रता' कहते हैं''। हमारे इस बातचीत से सर्वमंगला की 'एकाग्रता' टूटी और झटसे हमारे पास दौडकर आयी और पूछी ''कब आए हो भैया? माँ ओर बाबा कुशल है नं''?

सारा दिन हमने दीदी के साथ बिताया और शाम होते-होते घर वापस लौटे। वापसी में भी गदाय बार-बार दीदी और जीजाजी के प्यार का ही स्मरण कर रहा था। ''शिवराम! दीदी अंकित भाव से जो सेवा जीजाजी की कर रही है, वह अभी भी मेरी आँखों के सामने स्पष्ट दिख रहा है''। सच कहूँ तो से सारी बातें मेरे मस्तिष्क से (शायद उसमें मिट्टी रहने के कारण) उड ही गयीं।

एक दिन बडे सबेरे ही गदाय हमारे घर आ पहुँचा। अवश्य कुछ विशेष बात रही होगी, वरना गदाय इतने सबेरे मेरे घर क्यों आएगा? मैंने यही प्रश्न किया तो गदाय का उत्तर था- ''आज हम स्कूल नहीं जा रहे है''। जल्दी ही मेरे घर आ जाना''। कहते हुए वापस लौट गया।

यह सुनते ही अब मुझे चैन कहाँ? माँ पीछे से आवाज दे रही थी- ''बेटा शिवराम, थोडा सा दूध पीकर जाना''। गदाय का बुलावा आने के बाद मुझे खान-पान की कैसी चिन्ता? दौडते-दौडते, हाँफते-हाँफते गदाय के घर पहुँचा तो देखा- मेरा मित्र अंदर के छोटे से कमरे में किसी

चीज को एकटक बडे ध्यान से देख रहा था। जाकर देखा तो उसने अपने कमरे के फर्श पर अपने पति की सेवा करने वाली सर्वमंगला का चित्र बडे सजीव रूप में बनाया है। अब मै गदाय का बार-बार यह कहना कि ''सर्वमंगला का पति के प्रति प्यार आँखों के सामने चित्र जेसा दिख रहा है''- को समझ पाया। गदाय की आँखों के साथ-साथ उसके कोमल हार्थे का वर्णन मै कैसे करूँ? जिस दृश्य को वह देखता है उसे अपने शब्दों के द्वारा एक ओर हमारी आँखों के सामने खडा करता है तो दूसरी ओर उसका रंगीन चित्र बनाकर उसे जीवंत कर देता है। शायद गया के भगवान विष्णु ने उसे यह वर दिया होगा।

''कैसे लग रही है मेरी बहिना? सच बोल, क्या इसे देखकर लग नहीं रहा है कि वह यहाँ स्वयं चली आयी''? गदाय के इन शब्दों से मैं इस दुनिया में आया। मैंने सच्चे मन से कहा- ''गदाय, इसके बारे में मुझसे अलग क्या पूछना? तुम जो भी करते हो, वह मुझे पसंद ही आती है। अच्छा, अब मैं तुमसे एक बात पूछूँ?''

''मुझे मालूम है कि तू क्या पूछने वाला है। यही, कि इतने सारे दृश्य मुझे प्रतिदिन दिखाई देते है तो मैंने केवल इस एक को ही चित्र में क्यों बाँधा है? बोल, यही तू जानना चाहता है कि नहीं''?

अरे वाह! मेरे मन की बात को मेरा मित्र नहीं जान

पाएगा तो और कौन पहचानेगा? इसीलिए मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। आपको नहीं मालूम कि, उसने एक बार क्या कहा था? "शिवराम, मै तुमसे एक विशेष बात बताता हूँ। सामने खडे व्यक्ति की आँखें, माथा और कान देखकर मै उसके स्वभाव को जान सकता हूँ। "माता के भक्तों के कान आँखों से बहुत नीचे होते हैं"।

यह सुनते ही मै चौककर अपने कानों को छूकर देखना आज भी मुझे याद है। मेरे इस बंदरिया काम को देख गदाय ठहाका मारकर हँसते हुए बोला- "शिवराम! तुम्हें डरने की कोई बात नहीं"। भले ही तेरे कान टेढे-मेढे हों लेकिन मै तेरे कान मरोडकर माँ के पास ले जाऊँगा। समझे"?

मालूम नहीं क्यों इस बात को सुनते ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। शायद उतना रोना मैंने जीवन भर में कभी नहीं रोया होगा। "अरे रे! यह क्या रोना"? कहते हुए गदाय ने मेरे पीठ पर हाथ फेरा। और उसके ऐसे प्यार भरे स्पर्श को भी आजतक मैंने अनुभव नहीं किया था। कडी धूप में चलने के बाद गला सूख जाता है तो ठण्डा पानी पीने से जो राहत मिलती है वही राहत आज मुझे गदाय क स्पर्श के 'इंद्रजाल' से मिली। फिर अपने आपको संभालते हुए मैंने पूछा - "अच्छा, तुमने यह नहीं बताया कि अपनी बहिना को इस चित्र में उतारते समय तुम्हें कैसा लगा"?

"ऐसे लगा जैसे कि माता बडे प्यार से शिवजी की सेवा कर रही हो। इसी भावना के कारण मैंने यह चित्र बनाया है"। गदाय प्रकृति से बच्चे के समान था, जो तुरन्त स्पंदित हो जाता है। इसी मासूमियत के कारण वह सदा दूसरों के दुःख-दर्दो को समझ सकता था। मालूम नहीं क्यों मेरे अन्दर यह भावना आयी कि दूसरों के दुःख-दर्द में सहारा देने के लिए गदाय है, लेकिन उसे सहारा देनेवाला कोई है?

....

चाहे हम दोनों इधर-उधर कहीं भी भटकें लेकिन तालाब के किनारे बैठना हम दोनों का मन पसंद काम था। उस दिन भी वैसे ही हम दोनों जाकर बैठ गए। मुझे लगा कि गदाय आज कुछ अधिक ही गंभीर है कि वह कुछ शून्य में खोया-खोया सा देख रहा था।

मन्द-मन्द समीर के झोंक के कारण गदाय के घुंघराले बाल इधर-उधर हिलते आकर्षित कर रहे थे। उसकी आँखों में चमक थी। मेरे मित्र को देखने पर लग रहा था कि इसे किसी कुशल कलाकार ने बनाया है।

मेरे लिए उसका मौन कुछ नया नहीं है। मै तो यही चाहता हूँ कि मौन रूप से ही सही लेकिन मेरा मित्र पास रहे। गदाय के मन और मस्तिष्क में क्या-क्या भावनाएँ

उड रही है- यह जानना किसी के बस की बात नहीं।

मै अपने आपको उसका बहुत अधिक निकट मानता हूँ। फिर भी ऐसे क्षणों में उसके मौन को भंग करने का साहस मै नहीं कर सकता। एक साथ पढने वाले हमारी पूरी मित्र मंडली एक दूसरे को बहुत अधिक चाहती है। लेकिन दिन ब दिन गदाय हमारी समझ से बाहर होता जा रहा था। मुझे लगा कि अब हम सबको छोडकर कुछ और ढूँढते हुए चले जाने का उसका समय आ गया है।

दादाजी की बतायी गई एक कहानी मुझे याद आयी। एक मछली को एक घडे में रखा गया था। लेकिन वह ऐसी बढती गयी कि उसे घडे में से निकाल कर पहले तालाब में और बाद में नदी में छोडा गया। क्या हमारा मित्र भी ऐसे ही शनैः शनैः बढता जा रहा है?

चारों ओर अंधेरा छा गया और गाँव में भी चहल-पहल धीरे-धीर कम होती जा रही थी। अब हमें घर लौटना है, वरना घर में हमारी माताओं को घबराहट होगी सोचते हुए मै गदाय को उठाना चाहा। इतने में स्वयं उसने अअपने मौन का भंग करते हुए कहा- "शिवराम! देख, ये तारे दूर-बहुत दूर टिमटिमाते हुए कितने सुन्दर दिख रहे हैं। लेकिन, दिन में ये दिखते ही नहीं। कैसा विचित्र है।"

अरे! इसमें आश्चर्य की क्या बात है? यह तो जीवन और प्रकृति का नियम है। लेकिन क्या इतनी छोटी सी सीधी सी बात को नहीं समझने के लिए गदाय कोई मूर्ख है? इसीलिए मैं मौन रह गया। उसने बताया "मेरी स्थिति भी बिलकुल वैसी है। मुझे लग रहा है कि कोई अद्‌भुत शक्ति मुझसे दूर रहकर आँख मिचौनी खेल रही है। एक पल के लिए मेरे अन्दर वह शक्ति इन तारों के ही समान चमकती है तो दूसरे पल, दिन में न दिखने वाले तारों के समान अदृश्य! मुझे ऐसे लगता है कि मानो कोई परदा डाल दिया गया है....."।

कहते हुए गदाय वैसे ही बैठा रह गया। लेकिन आप यह नहीं सोचना कि हम दोनों फिर से अपनी-अपनी सोच में डूब गए। सच्चाई तो यह है कि कुछ सोचने के लिए मेरे पास मस्तिष्क ही कहाँ है? इतना ही नहीं, मेरे मन के हर अंगुल में गदाय ही गदाय समा गया है। इसीलिए उसकी ओर एकटक देखना और उसकी बातें सुनने के अलावा मैं कर भी क्या सकता था?

ऐसे ही दस मिनट हुए कि नहीं, गदाय झट से उठकर बोला- "अबतो हमें चलना है। बहुत देर हो गयी है। बाबा भी घर में नही है और माँ अकेली घबराती होगी"। हाँ, मैं भी भूल गया कि बाबा अपने भानजे के बुलाने पर मेदिनीपुर पूजा करवाने गए थे।

लेकिन? बाबा सदा के लिए चले गए। रास्ते में राम नाम का स्मरण करते हुए कभी वापस न आने वाले लोक में समा गए।

पहाड जैसा दु:ख गदाय पर टूट पडा। उसको कितना दु:ख होता होगा, मै इसे जान सकता हूँ। लेकिन अपने कष्ट को स्वयं ही सहलेना मेरे मित्र की विशेषता ही नहीं वरन् आदत भी है।

इसी सुदर्भ में मै आपको एक बात का स्मरण दिलाना चाहता हूँ। शायद आपको मालूम ही है कि 'माता' में लीन होने से पहले हमारे मित्र के गले में एक फोडा आ गया था, जिससे एक बूँद पानी भी वह निगल नहीं पा रहा था। अरे, उसे कितनी पीडा होती होगी यह सोचते-सोचते मै काँप उठता हूँ। बहुत थकान होती है..।

कभी-कभी मुझे माँ पर गुस्सा भी एकाएक आ जाता था कि अपने इस कोमल और लाडले को इतना भयानक कष्ट क्यों आने दिया? माँ से मै इसके बारे में पूछना क्या, वास्तव में झगडना ही चाहता था। फिर भी, छोड दीजिए इन बातों को। बडों से तर्क वितर्क करने के लिए और वह भी माँ से, मै पढा-लिखा थोडी ही हूँ।

आपतो जानते ही है कि ऐसे शारीरिक कष्ट झेलने

वालों का चेहरा कैसे रहता है? उतरा हुआ चेहरा, अंदर गयी हई आँखें और मृत्यु के निकट आ जाने की चिन्ता उन रोगियों को हर पल-हर घडी खाती रहती है। अपने चारों ओर के लोगों पर अकारण ही गुस्सा करना और बरस पडना उनके लिए साधारण बात हो जाती है।

ऐसे कठिन समय में भी मेरे मित्र को जितने लोगों ने देखा, सबने मुक्त कण्ठ से यही घोषणा की की उसके शान्त मुख पर अटूट आत्मबल के साथ-साथ कभी न मिटने वाला मन्दहास भी स्पष्ट झलक रहा था। उसकी आँखों में सामने वालों को बन्दी बना लेने का प्यार और आकर्पण झलकता ही रहा।

दर्शकों का कहना है कि मन्दहास में हमें बहुत बडा आश्वासन गोचर होता है, मानो यह कहते हुए कि ''आइए! आइए! आपका मन चाहा प्राप्त करने के लिए कल्पतरू है यहाँ! अगर आप माँगने में असमर्थ हैं तो भी कोई बात नहीं। वह स्वयं आपके लिए जो भला है, वह देगा। आइए! आप इस छाँव में आकर राहत पाइए। बेकार में आप धूप में प्यास के मारे क्यों दर-दर भटकते है''?

बाबा के मरने के बाद गदाय के मन में यह भावना बैठ गयी कि मुझे माँ की सहायता और अधिक करनी होगी। माँ को वह कुछ भी काम नहीं करने देता था।

गदाय को देखकर हमें सीखना है कि किसी भी काम को श्रद्धा से कैसे करनी चाहिए। पूजा की सामग्री को ऐसे चमकाता था कि आप अपना चेहरा देख सकते हैं। दिया जलाने के लिए गदाय के हाथों से बनी बत्तियाँ निश्चल होकर काफी देर तक प्रकाश फैलाती थीं। और गदाय के हाथों गूँथी गई फूलों की माला? ओह! रंग-बिरंगे फूलों को चुन-चुनकर ऐसे गूँथता था कि देखने वाले देखते ही रह जाएँगे।

इन सबसे अलग हर वस्तु को करीने से सजाना और काम हो जाने के बाद जहाँ की वस्तु वहीं पर वापस रख देना-ऐसी बातों पर गदाय बहुत जोर देता था। अगर हमने वस्तुओं को तितर-बितर करदी तो उससे अवश्य डाँट पडेगी।

छोटी सी वस्तु को भी अगर हम बेकार में खर्च कर देते है उसे कितना गुस्सा आता है, एकबार मुझे भी दिखाया। हुआ यह कि एकबार दिया जलाने के लिए मैंने एक के स्थान पर दो तीलियाँ जलायी। मालूम है गदाय ने क्या कहा? ''देख! वस्तु चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, उसे हमें बडी सावधानी से उपयोग करना होगा। तुम ऐसे फिजूल का खर्चा कर रहे हो तो उसका अर्थ है कि तुम्हें यह काम करने की इच्छा नहीं है। आज अगर छोटे-छोटे कार्यों में तुम आलसीपन दिखाते हो तो कल बडे-बडे

कामों में भी तुम्हारा वही गुण स्पष्ट झलकेगा! समझे''।

....

बाबा के स्वर्गवास के बाद गदाय के परिवार के लिए घर चलाना बहुत कठिन हो गया। इसीलिए रामकुमार भैया कलकत्ता चले गए और वहाँ रासमणिजी द्वारा बनाये गए मंदिर के पुजारी बन गए।

अब सारा भार गदाय के कंधों पर आ गिरा। कितने भी सांसारिक झंझटों में वह लगा रहे, लेकिन मुझे मालूम है कि माँ के दर्शन के लिए जाल में फँसे मछली की भांति छटपटाता था। उतनी छोटी सी आयु में छोटी सी छोटी बात के लिए ऐसे तीव्र रूप में सोचना देखते-देखते मुझे हैरानी भी होने लगी।

हमारे गदाय के घर के सामने ही एक तालाब है। चाहे कितने भी व्यस्त क्यों न हों लेकिन थोडी देर के लिए ही सही उसके किनारे बैठे बिना हमारा दिन नहीं कटता था। वैसे तब तक हमारे रामकुमार भैया घर चलाने के लिए कुछ अधिक धन कमाने के उद्देश्य से कलकत्ता चल पडे। यहाँ गदाय तालाब के किनारे बैठकर दुःखी होता था कि वहाँ शहर में धन कमाने के लिए भैया क्या-क्या कष्ट झेल रहे होंगे और एक मैं यहाँ कुछ भी काम का नहीं निकला। इसे सुनने के बाद मैंने एक छोटी सी सलाह

दी- ''क्यों गदाय, तुम भी बडे होकर धन कमा सकते हो! है कि नहीं''?

''हाँ-हाँ मुझे मालूम है कि जीवन यापन के लिए धन की आवश्यकता बहुत होती है। लेकिन मुझे तो इस धन कमाने में कोई रुचि नहीं होती। शिवराम, बताऊँ वैसे मुझे सबसे अच्छा क्या लगता है''?

यद्यपि मैंने कहा ''बता'' फिर भी मुझे मालूम है कि गदाय को 'कथनी' से अधिक 'करनी' पसंद है। गदाय ने हँसते हुए कहा- ''शिवराम, तालाब में उतरकर थोडी सी मिट्टी ला''! मैंने सोचा कि कुछ गुडिया बनायेगा। मेरे मिट्टी लाने के बाद गदाय ने कहा ''अरे शिवराम! तेरे पास एक पैसा है क्या? वैसे तुझे तो मालूम ही है न कि मेरे पास कभी-पैसे ही नहीं होते''।

हमेशा अपने पास दो-चार पैसे मै इसलिए रख लेता हूँ ताकि मै अपने मित्र को एकाधबार मुरमुरे खिला सकूँ! उन्हीं में से एक पैसा मैंने गदाय के हाथ में थमा दिया। जानते है आप कि उसने झट से क्या किया? उसने अपने दाएँ हाथ में पैसा और बाएँ हाथ में मिट्टी उठाया। बडी सावधानी से दोनों हाथों की परीक्षा करते हुए बोला ''मिट्टी और सोना! सोना और मिट्टी! दोनों एक है। लेकिन माँ के पास जाना है तो दोनों ही किसी काम के

नहीं"। कहते-कहते मिट्टी और पैसा दोनों को तालाब में फेंक दिया।

इसे देख मैं चौंक गया। अरे, अभी-अभी स्वयं कह रहा था कि घद चलाने के लिए धन चाहिए और दूसरे क्षण में उसे पानी में फेंक डाला। बात मेरी समझ में कुछ नहीं आयी। पर मेरे अन्दर यह भावना एक पल के लिए ही रही क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि गदाय जो भी काम करता है, उसके पीछे कुछ न कुछ कारण रहता ही है। उसे हम दोषी नहीं ठहरा सकते।

भविष्य में दक्षिणेश्वर जाने के बाद, यह बात कहाँतक पहुँचती है क्या आप जानते हैं? कम से कम यहाँ कमलपकूर में उसने पैसे को छुआ था। लेकिन दक्षिणेश्वर में. तो सिक्के को छूते ही उसके शरीर में उष्ण पैदा हो जाता था और हाथ भी टेढा-मेढा हो जाता था।

अच्छा, इस बात को रहने दीजिए। दक्षिणेश्वर में भी कुछ कम हलचल नहीं मची। अब इसबात को सुनकर कि रामकुमार भैया कलकत्ता से आ रहे है, मुझे घबराहट होने लगी क्योंकि मुझे मालूम है कि क्या होने वाला है। क्या मैं इसे सहन कर पाऊँगा?

रामकुमार भैया कलकत्ते में संस्कृत पढाने के

साथ-साथ अब रानी रासमणि के बनवाए गए मंदिर के पुजारी का भी काम करते थे। लेकिन दोनों काम स्वयं संभाल नहीं पा रहे थे, इसलिए हमारे मित्र गदाय को भी अपने साथ ले जाने आ रहे थे। दूसरे ही दिन वे निकल जाएँगे।

....

इसे सुनकर हम सब बच्चे बहुत दुःखी हो गए। कमलपकूर में गदाय के बिना हमें जीना है- यह भाव आते ही हम सब रो पडे। जब तक आप स्वयं उस दुःख का अनुभव नहीं करते हैं, तब तक शायद आप मेरे इन शब्दों के पीछे की वेदना को समझ नहीं पाएँगे। आज तक केवल रात में सोने के लिए ही मैं गदाय को छोडकर अपने घर जाता था। बाकी समय मैं उसकी छाँव की भांति उसके साथ-साथ उठता-बैठता था। उसने भी मुझे नहीं छोडा।

यह कहना कठिन है कि कौन सी "महान शक्ति" अथवा "माता" उसे आगे बढा रही है। एक बहुत ही अच्छे मित्र या हितैषी के नाते हम उसके बारे में स्मरण करने के अलावा क्या हम बच्चे उसे कुछ समझ सकते थे?

इसी लिए जब उसके कलकत्ता जानें की बात सुनी तो मैं सिसकियाँ भर-भर कर दिन भर रोता ही रहा। शाम में पागल की तरह अकेलेही खेतों में घूमता रहा। अब

आगे मुझे अकेले ही तो दिन बिताने हैं। छाती पर पत्थर रखकर उस एकांत में अपने मित्र के साथ इतने दिन बिताए हर पल हर घडी और छोटी सी छोटी घटनाओं को स्मरण करता ही रहा और सिसकियाँ भरता ही रहा। उस एकांत में न जाने कितनी बार ''गदाय-गदाय'' की पुकार मेरे कण्ठ से आयी।

''शिवराम! यहाँ बैठकर तुम यह क्या कह रहे हो''? इन शब्दों को सुन मै चौककर पीछे मुडकर देखा तो वहाँ गदाय न जाने कब आकर खडा था! मुस्कुराते हुए प्यार भरे आँखें से मुझे निहार रहा था। ''हाँ-हाँ! हँसो, और आराम से हँसो। उस 'बडे शहर' में जाकर तुम 'बहुत बडे' बन जाओगे और हम? हम यहाँ बस ऐसे ही.....'' रूदन ने मेरे शब्दों को निगल लिया। रोते-रोते ही मैंने गदाय को ऐसे ही खूब ताने मारे। गदाय मुझे समझाने के लिए कहा, ''ठीक है बाबा! मैं तुम्हारी बात मानता हूँ। अच्छा मुझे एक बात बताओ। मानलो, माँ ने तुम्हें कुछ अच्छी सी चीज खाने के लिए दी है तो क्या तुम अकेले ही खा जाओगे? या मुझे और मेरे साथ दूसरे अपने मित्रों को भी खिलाओगे? मैंने झट से उत्तर दिया ''दूसरों की बात तो मैं कह नहीं सकता हूँ लेकिन तुम्हें हिस्सा दिए बिना क्या कोई भी चीज मेरे मुँह से अन्दर जाएगी''?

''अब समझने का प्रयत्न करो मित्र! यह भी ठीक

वैसा ही है। माता ने मुझे ''दूसरों को प्यार करना'' रूपी वस्तु दी है। उस प्यार को मुझे सारे संसार में बाँटना है। इतना ही नहीं, माँ मुझसे आँख मिचौनी खेल रही है। एक बार दिखेतो एक बार छिप जाए। उस लुका-छिपी खेलने वाली माँ को मुझे पकडना भी है। माँ को पकडकर सारी दुनिया को उसके पास ले जाना है। बता, है कि नहीं? भैया ने बताया है कि गंगा के किनारे नए मंदिर में माँ चमक रही है। गंगा क्या है और वह कितनी पवित्र है यह तो तुम भी जानते हो। उस पानी में एक बार डुबकी लगाएँगे तो हमारे सारे पाप अपने आप धुल जाएंगे। अच्छा, अब सावधानी से, ठण्डे मन से सोचकर बता कि क्या मुझे वहाँ नहीं जाना है, सब से कडा प्रश्न यह है कि हमारे आँखों के सामने कोई नहीं है तो क्या हम उसे मन से भी निकाल देंगे? क्या में तुम्हें छोडकर जा सकता हूँ? सच-सच बोल''! गदाय अपने सहज मन्दहास के साथ अपनी मधुरवाणी में एक ओर समझाते-समझाते ही मुझसे प्रश्न भी कर रहा था, जिससे मै सोचने पर मजबूर हो गया।

''सच-सच बोल''। गदाय के ये शब्द बार-बार मेरे कानों में गूँजने लगे। अचानक मेरे मन में एक बात सूझी। खैर, इसमें मेरी होशियारी नहीं थी बल्कि दादाजी के द्वारा बतायी गयी एक कहानी के कारण।

एक बार लक्ष्मण भैया को हनुमानजी के प्रति बडी

ईर्ष्या हुई। अरे, मै तो श्रीरामचन्द्रजी का सगा छोटा भाई हूँ। मैंने उनकी बडी सेवा की है। वन में क्या, हर हालात में मैंने उनका साथ दिया। फिर भी लोग ''रामभक्त हनुमान'' ही कहते हैं, ''रामभक्त लक्ष्मण'' क्यों नहीं कहते? अरे, इस हनुमान की विशेषता क्या है? लक्ष्मण के मन की भावना को समझकर हनुमानजी ने तुरन्त अपनी छाती को फाडकर दिखाया तो जानते हैं अन्दर कौन विराजमान थे? साक्षात् ''सीताराम''।

इसी कहानी की मुझे याद आयी। मेरे मन में भी गदाय पूरा छा गया है। उसमें किसी दूसरे के लिए रत्ती भर भी जगह नहीं होती। कलकत्ता जाएगा तो भी वह मुझसे दूर थोडी ही जाएगा। क्योंकि मैं उसे अपने मन से कभी बाहर जाने नहीं देता हूँ। बस! सीधी सी बात है। समझ में आ गई।

....

चाहते हुए भी हम समय को रोक नहीं सकते हैं। हर दिन की भांति उस दिन भी सूर्योदय हुआ। गदाय ने हम सबसे पिछली रात ही कलकत्ता जाने की बात कहकर बिदाई ले ली और बोला ''मुझे भूलना नहीं''। गाँव में हम अपने घर से निकल कर खेतों से पैदल होते हुए सड़क पर जाकर बैलगाडी में बैठते है तो धीरे-धीरे उस रास्ते से हम कलकत्ता पहँच सकते है।

उस दिन गदाय कितना सुन्दर दिख रहा था। एक छोटी सी धोती उसने बडे करीने से पहनी थी और माँ की दी हुई एक तौलिया अंगोछे के समान कंधे पर डाला था। चौडा माथा, घने घुंघराले बाल, गहराई से देखने वाली आँखे, और इन सबसे बढकर चेहरे पर मधुर मंदमुस्कान! उसकी मुस्कान मानों हमें यह समझा रहा था कि, "यह पूरा जीवन ही एक नाटक है। जिसे जो वेष मिलता है, उसे धारण करना ही पड़ता है। माँ से बनाये गए इस संसार में सर्वत्र आनंद ही आनंद है। इसीलिए हर प्रकार की परिस्थितियों में हमें हँसते ही रहना चाहिए। मिलना और बिछुडना भी उसी नाटक के अंग है"।

अपनी माँ को प्रणाम कर गदाय और भैया दोनों कलकत्ता जाने के लिए सडक पर आ गए। वहाँ हमारे गाँव के पूरे लोग इकट्ठा हो गए। सबकी आँखें भरी थीं। अब हम दोस्तों के मुख से शब्द नहीं बल्कि आँखों से आँसू टपकने के लिए तैयार थे। अरे हम बच्चों का ही नहीं हमारे मास्टरजी का भी चेहरा उतरा हुआ था। हमारे गाँव के सबसे बडे प्रमुख माणिकराजा स्वयं गदाय को बिदा करने आ खडे हुए। हमारे गाँव की सभी माताएँ, बहनें, दादियाँ, बुआएँ..... सबके सब अपने आँखों में आँसू छिपाकर अपने-अपने घर के चबूतरों पर खडी, गदाय को देख रही थीं।

हम सबकी यह दयनीय दशा देखकर गदाय ने कहा

"अरे शिवराम! तुम लोग इतने दुःखी क्यों होते हो? मैं तुम सबको छोडकर हमेशा के लिए थोडे ही जा रहा हूँ। मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगा। तुम सबतो मेरे मन में बसे रहते हो"।

हमारा दुःख कम करने के लिए गदाय हम सबसे ये सारी बातें कह रहा था, पर हम सब अच्छी तरह से जानते है कि गदाय यहाँ कमलपकूर में दुबारा कभी नहीं दिखेगा। हमारे गाँव के तालाब इस गदाय रूपी मछली को और रख नहीं सकते। इस मछली को गंगा नदी के किनारे बैठी 'माता' के समक्ष ही तैरना होगा। वैसे गंगा भी तो मैया ही है। इसीलिए किनारे बैठे गदाय को अपने लहरों के अंक में झुलाने वाली है।

गदाय के द्वारा पवित्र की गई गंगा की लहरों पर अभी भविष्य में कितने हजारों लोगों के प्यास को बुझाने का भार है। हर तरह के प्यास से तडपने वाले अनगिनत लोग एक बूँद ही सही अमृत से अपने प्यास को बुझाने के लिए वहाँ आएँगे।

ऐसे विचारों में खोया मै मौन खडा देख रहा था। अपार दुःख के कारण मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। अचानक मेरा मन एक दम से हल्का हो गया। शायद गदाय ने मेरे मन की यह स्थिति भाँप ली। इसीलिए गाडी

में बैठा गदाय हँसते हुए, मेरी ओर अपना हाथ बढाया और कहा ''अरे शिवराम! कलकत्ता जाते-जाते रास्ते में कुछ खाने के लिए मेरे लिये लाया कि नहीं?''

ऐसी बातों को मै थोडे ही भूलने वाला हूँ। मुझे मालूम था इसीलिए गदाय की मन पसंद चीजें लड्डू और जलेबियाँ पुडिये में बाँधकर लाया था। मैंने पुडिया को गदाय के हाथ में रख दिया। पुडिया लेकर गदाय ने मेरे हाथ पर एकबार कोमल स्पर्ष कर छोड दिया।

धीरे-धीरे गाडी आगे बढने लगी। जानते है आप कि अन्त में मैंने अपनी आँखों से क्या देखा? गदाय ने पुडिया खोला और जलेबी को अपने मुहँ में रखा। हाथ ऊपर उठाकर मेरी ओर हिलाते हुए मानों मुझ से कह रहा हो कि ''अरे! तुम्हारी दी हुई जलेबी कितनी मीठी है''।

बस! यह देखकर मेरा मन संतुष्ट हो गया। मुझे लगा कि कम से कम उस मधुर क्षण के लिए मुझे हर जन्म में गदाय का मित्र बनकर पैदा होना है। इसीलिए अभी भी सोचता हूँ कि, ''मुझे न मुक्ति चाहिए और न जन्म राहित्य! कितने ही संकट क्यों न टूट पडें मुझ पर, मुझे तो केवल गदाय का मित्र बनकर रहना है। हे प्रभु! ममता और स्नेह भरे गदाय के नेत्रों की छाँव में मुझे सोने दे। उसके स्नेह रूपी तरंगों में मुझे सदा के

लिए डूबते रहने दे"।

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पये"।